॥ श्रीहरिः ॥
2270
अयोध्या-दर्शन
गीताप्रेस, गोरखपुर
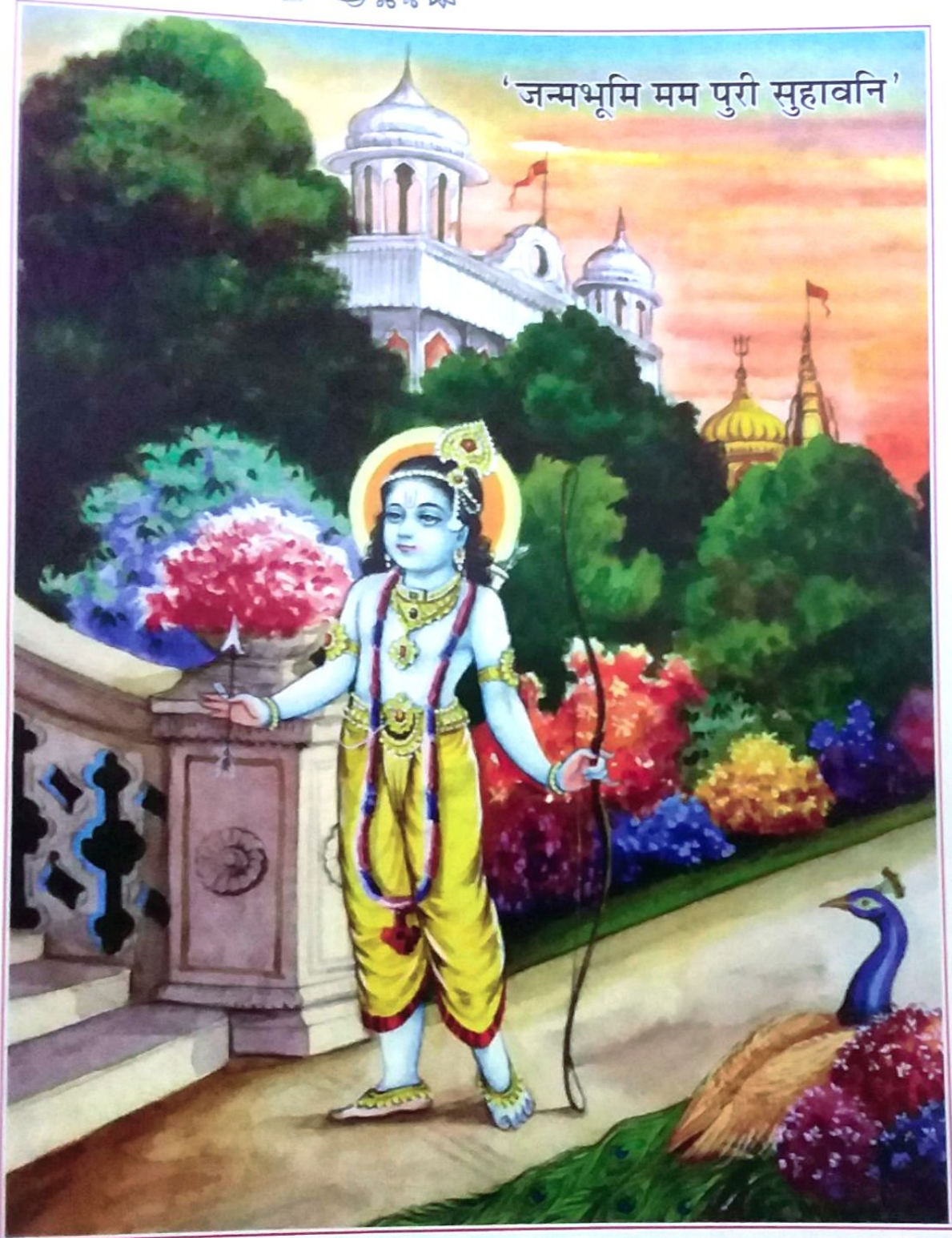
अयोध्याकी वीथियोंमें बालक भगवान् श्रीराम

जद्यपि सब बैकुंठ बखाना। बेद पुरान बिदित जगु जाना॥
अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ। यह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ॥
जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि। उत्तर दिसि बह सरजू पावनि॥
जा मज्जन ते बिनहिं प्रयासा। मम समीप नर पावहिं बासा॥
अति प्रिय मोहि इहाँ के बासी। मम धामदा पुरी सुख रासी॥

अयोध्याके कालेराम मन्दिरमें विक्रमादित्यकालीन श्रीरामपंचायतन

अयोध्याका प्राचीन श्रीनागेश्वरनाथ मन्दिर

अयोध्याकी हनुमानगढ़ीका विख्यात श्रीहनुमानमन्दिर एवं श्रीविग्रह

अयोध्यामें सरयू-तट स्थित गुप्तारघाट—(गोप्रतार-तीर्थ)

अयोध्याके हनुमानबागमें स्थित ज्ञानमुद्रामें श्रीहनुमानजी

अयोध्याका विख्यात कनकभवन
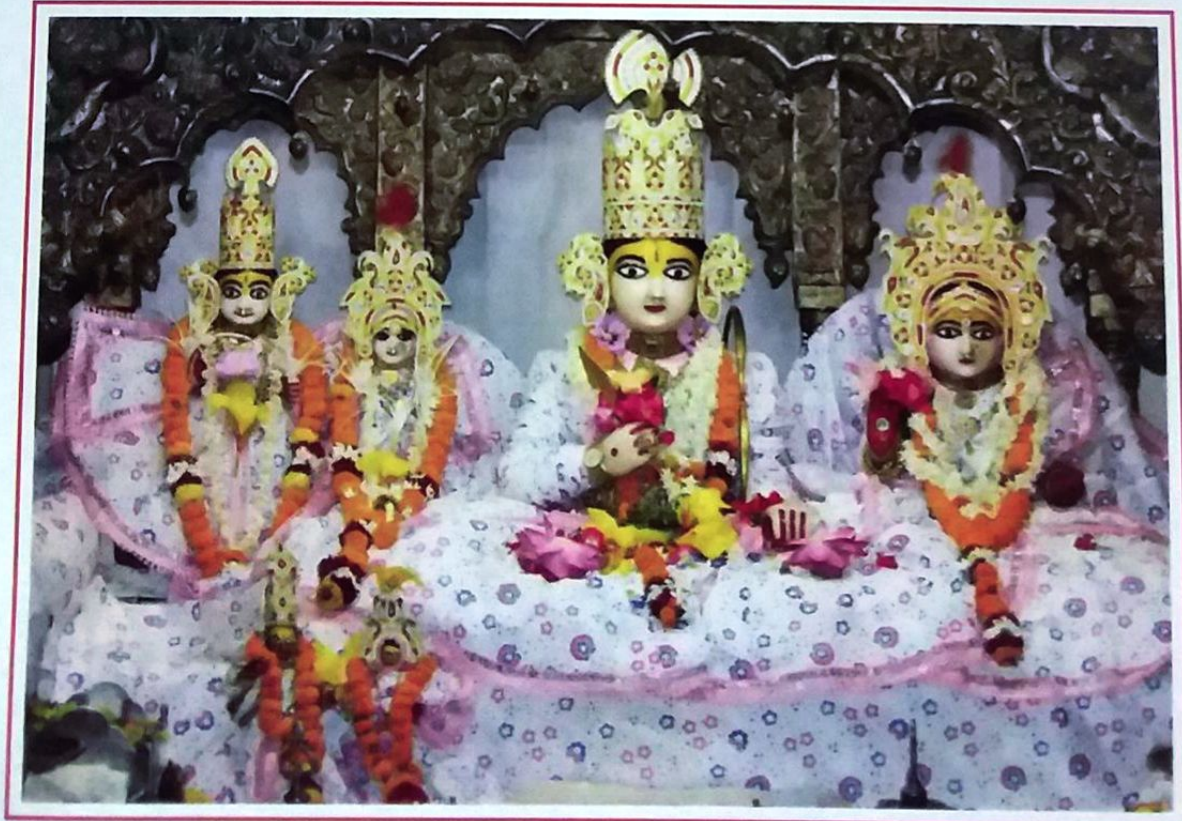
कनकभवनकी दिव्य झाँकी

अयोध्याकी वीथियोंमें रामललाकी बाल-क्रीड़ा

ललित-ललित लघु-लघु धनु-सर कर, तैसी तरकसी कटि कसे, पट पियरे।
ललित पनही पाँय पैंजनी-किंकिनि-धुनि, सुनि सुख लहै मनु, रहै नित नियरे॥
पहुँची अंगद चारु, हृदय पदिक हारु, कुंडल-तिलक-छबि गड़ी कबि जियरे।
सिरसि टिपारो लाल, नीरज-नयन बिसाल, सुंदर बदन, ठाढ़े सुरतरु सियरे॥
सुभग सकल अंग, अनुज बालक संग, देखि नर-नारि रहैं ज्यों कुरंग दियरे।
खेलत अवध-खोरि, गोली भौंरा चक डोरि, मूरति मधुर बसै तुलसीके हियरे॥
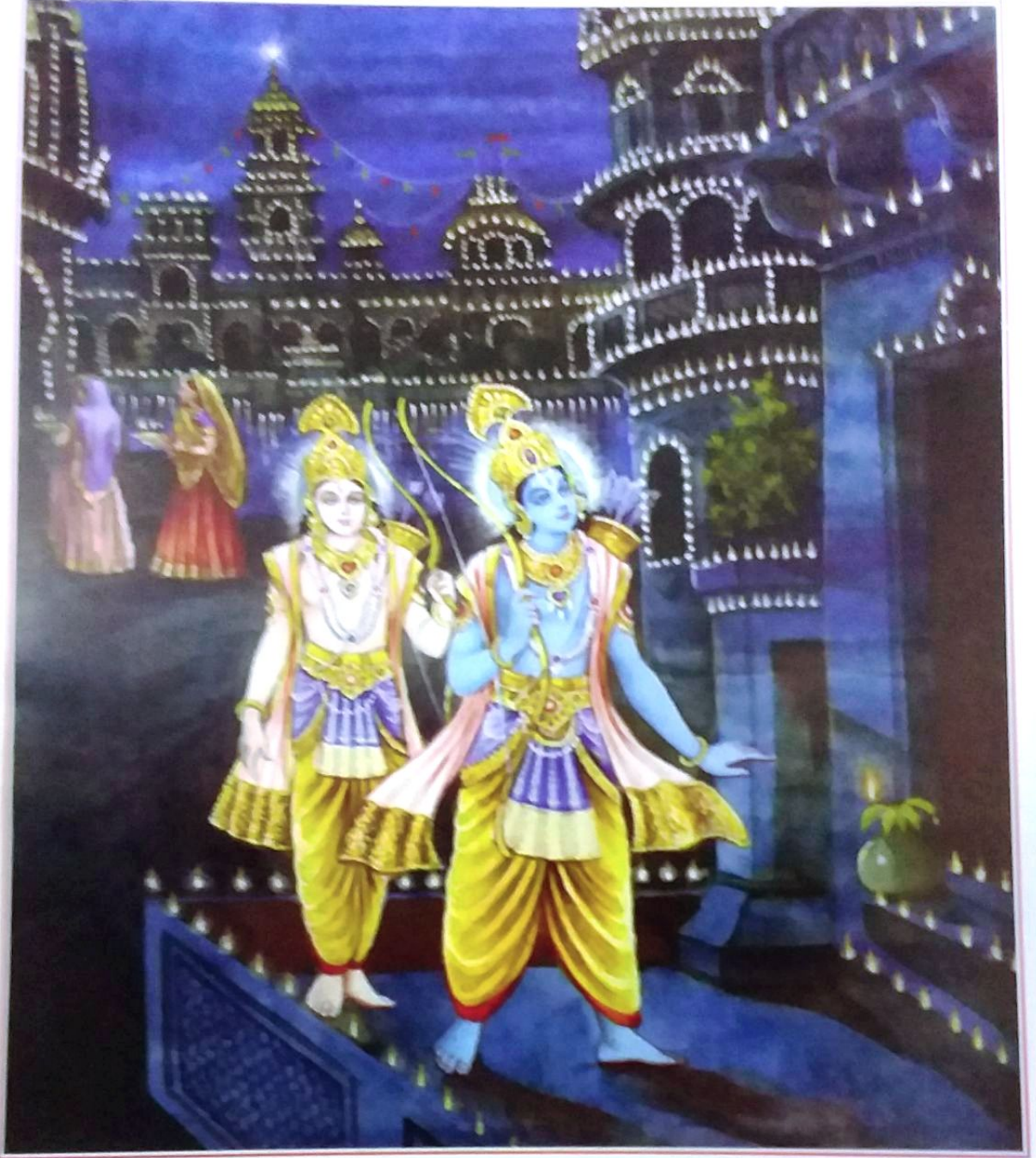
श्रीराम-लक्ष्मणद्वारा अयोध्याकी दीपावलीका दर्शन

साँझ समय रघुबीर-पुरीकी सोभा आजु बनी।
ललित दीपमालिका बिलोकहिं हित करि अवधधनी॥
फटिक-भीत-सिखरन-पर राजति कंचन-दीप-अनी।
जनु अहिनाथ मिलन आयो मनि-सोभित सहसफनी॥
प्रति मंदिर कलसनिपर भ्राजहिं मनिगन दुति अपनी।
मानहुँ प्रगटि बिपुल लोहितपुर पठइ दिये अवनी॥
घर घर मंगलचार एकरस हरषित रंक-गनी।
तुलसिदास कल कीरति गावहिं, जो कलिमल-समनी॥
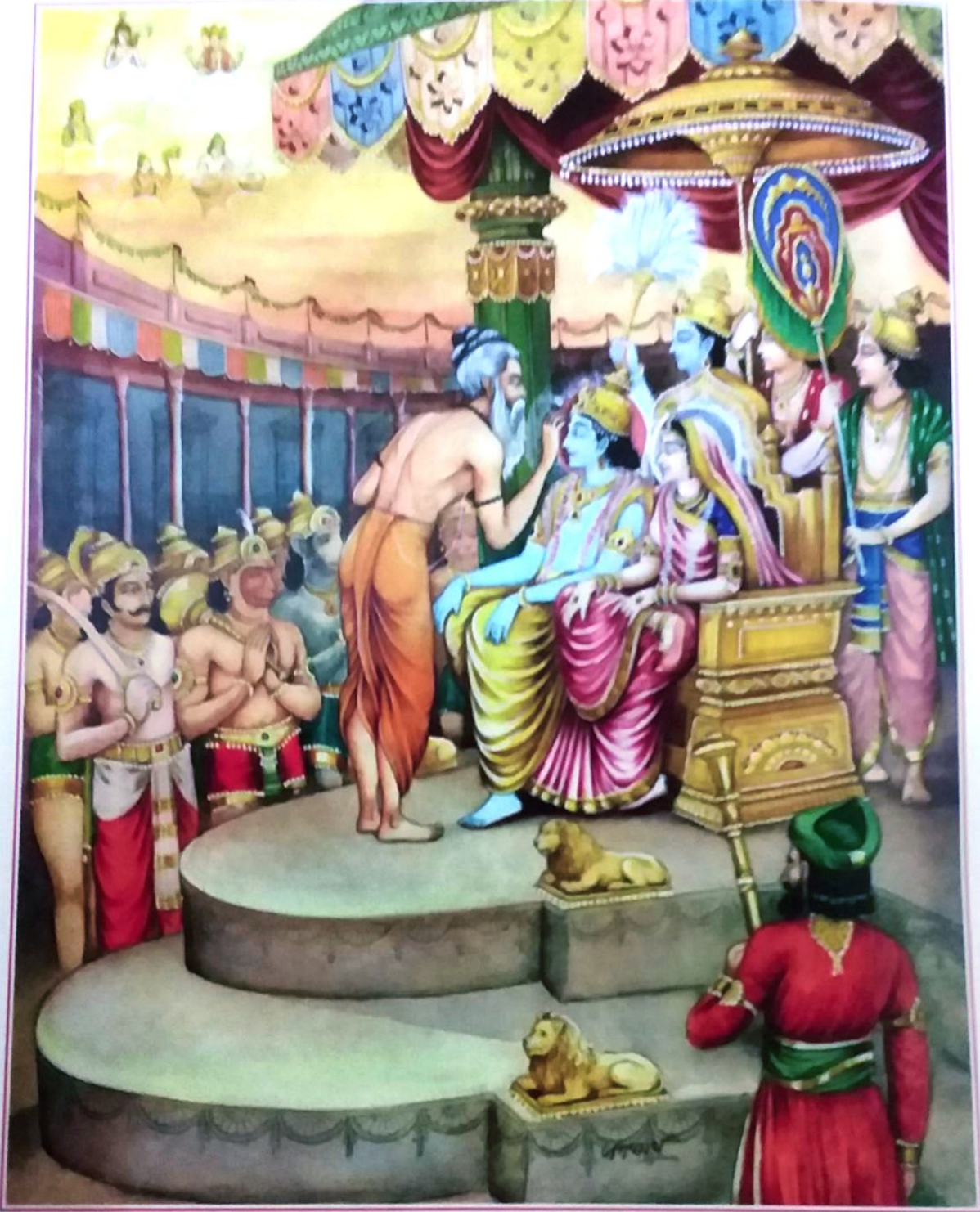
अयोध्यामें मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामका राजतिलक

प्रभु बिलोकि मुनि मन अनुरागा। तुरत दिब्य सिंघासन मागा॥
रबि सम तेज सो बरनि न जाई। बैठे राम द्विजन्ह सिरु नाई॥
जनकसुता समेत रघुराई। पेखि प्रहरषे मुनि समुदाई॥
बेद मंत्र तब द्विजन्ह उचारे। नभ सुर मुनि जय जयति पुकारे॥
प्रथम तिलक बसिष्ट मुनि कीन्हा। पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा॥

राम् रामाय नमः

राम् रामाय नमः

श्रीअयोध्याजीके व्रतपर्वोत्सव

(महन्त श्रीनृत्यगोपालदासजी महाराज)

श्रीअयोध्याधाम साक्षात् भगवत्स्वरूप है।

रामस्य नाम रूपं च लीला धाम परात्परम्।
एतच्चतुष्टयं नित्यं सच्चिदानन्दविग्रहम्॥

श्रीरामका नाम, रूप, लीला एवं धाम—ये चारों ही सच्चिदानन्दविग्रह साक्षात् परात्पर ब्रह्म हैं।

श्रीअयोध्याजीका वर्णन ध्यानमंजरीमें बड़ा सुन्दर है ***'अवधपुरी निज धाम परम अति सुन्दर राजै।'*** इसी प्रकार गोस्वामीजीने भी अयोध्याका वर्णन नित्य मंगलमयी पुरीके रूपमें किया है—

नित नव मंगल कोसलपुरी।

श्रीअयोध्याजीमें व्रत एवं पर्वोंका सम्मिलित स्वरूप है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदासे नवसंवत्सर प्रारम्भ होता है एवं नवरात्र भी। अतः पूजन-पाठके साथ नवाह्नपाठ, कीर्तन-भजन, कथा-सत्संग एवं श्रीरामलीला-रासलीला आदिके नवदिवसीय आयोजन होते हैं। सायंकाल ***'अवधमें बाजे बधैया'*** का दिव्यानन्द मिलता है।

मासे मधौ या नवमी सुयुक्ता
शुक्लाऽदितीशेन शुभेन येन।
कर्के महापुण्यतमा सुलग्ने
जातोऽत्र रामः स्वयमेव विष्णुः॥
अत्र प्रकुर्वीत मुदा व्रतोत्सवं
रामार्चनं जागरणं महाफलम्।
अनेकजन्मार्जितपापनाशनं
श्रीरामकीर्तिश्रवणं च कीर्तनम्॥

वैशाख शुक्लपक्षके प्रारम्भमें चैत्रकी पूर्णिमासे ही चौरासी कोसकी परिक्रमा प्रारम्भ हो जाती है, जो श्रीजानकीनवमीको पूर्ण होती है।

वैशाख शुक्लपक्षकी तृतीयाको, जिसे अक्षयतृतीया कहते हैं, सत्ययुग प्रारम्भ होता है, श्रीठाकुरजीकी विशेष अर्चना होती है। वैशाख शुक्ल नवमीको श्रीजानकीजन्म-महोत्सव होता है।

पुष्यान्वितायां तु कुजे नवम्यां
श्रीमाधवे मासि सिते हलेन।
कृष्टा क्षितिः श्रीजनकेन तस्यां
सीताविरासीद् व्रतमत्र कुर्यात्॥

श्रीरामनवमीकी भाँति ही इस महोत्सवमें भी नवदिवसीय श्रीरामायणपाठ होता है एवं बड़ी धूम-धामसे बधाइयाँ गायी जाती हैं।

वैशाख शुक्लपक्ष स्वातीनक्षत्र चतुर्दशी तिथिको भगवान् नृसिंहका प्राकट्य-महोत्सव मनाया जाता है एवं व्रत भी रखा जाता है। यह पर्व विशेषरूपसे असत्के ऊपर सत्की विजयका प्रतीक है, साथ ही भक्तराज प्रह्लादके विश्वास एवं आस्थाका परिचायक है।

ज्येष्ठमासमें गरमीसे बचनेके लिये भावनानुसार फूल-बँगले सजाये जाते हैं जिनमें श्रीसीताराम भगवान्‌को विराजमानकर गान-महोत्सव होता है। ज्येष्ठ शुक्लपक्षकी पूर्णिमाको श्रीगंगादशहराकी भाँति श्रीसरयूजन्मोत्सव मनाया जाता है। इस पर्वपर श्रीसरयूतटपर विशेष झाँकीका आयोजन होता है, जिसमें आरती एवं पूजन किया जाता है।

आषाढ़मासमें शुक्लपक्षकी द्वितीयाको भगवान् श्रीजगन्नाथजीकी भाँति **श्रीरामजीकी रथयात्रा**में श्रीसरयूतटपर बड़ी संख्यामें सन्त-भक्त एकत्र होते हैं। आषाढ़मासकी **गुरुपूर्णिमा**को श्रीगुरुपूजन सभी आश्रमों एवं स्थानोंमें भक्तजनोंके द्वारा बड़े उत्साहसे मनाया जाता है। विशेषकर भगवान् श्रीरामजीके गुरुदेव श्रीवसिष्ठजीके वसिष्ठकुण्डपर भक्तजन गुरुपूजनको जाते हैं। यह गुरुपर्व गुरु-शिष्यपरम्पराका गरिमामय पर्व है।

श्रावणमास सरस—रसमय मास है, इसमें श्रीसीतारामजी महाराज झूला झूलते हैं। सर्वप्रथम मणिपर्वतपर श्रीअयोध्याजीके अधिपति

श्रीठाकुरजी झूला झूलने जाते हैं। श्रीसीतारामजीका पंचदशदिवसीय **झूलन-पर्व** गाने-बजानेके साथ मनाया जाता है।

नागपंचमीको नागपूजनके साथ शेषावतार श्रीलक्ष्मणजीकी विशेष पूजा होती है एवं लक्ष्मणघाटपर स्नान होता है। श्रावण शुक्लपक्षकी सप्तमीको गोस्वामी तुलसीदासजी महाराजकी जन्मतिथि मनायी जाती है। इस अवसरपर विशेष पूजन-अर्चन एवं मानसप्राकट्यस्थली तुलसीचौरा एवं तुलसीस्मारकमें प्रवचन-सत्संगके कार्यक्रम सम्पन्न होते हैं। श्रावणमासका प्रधान पर्व है—**श्रावणीकर्म**, जिसमें द्विजातियोंके साथ श्रीसरयूतटपर विभिन्न विद्वन्मण्डलियोंके द्वारा श्रावणीकर्म सम्पन्न होता है।

भाद्रपद श्रीकृष्णजन्माष्टमी—व्रत एवं उपासनाका महान् पर्व है—

भाद्रेऽसिते निशीथेऽथ रोहिण्यामष्टमीतिथौ।
सिंहमर्के गते सौम्ये कृष्णो जातो विधूदये॥
कृष्णजन्माष्टमी सोक्ता तस्यां कृष्णमहोत्सवम्।
कुर्वीत विधिसंयुक्तं चतुर्वर्गफलप्रदम्॥

अष्टमीको मध्यरात्रिमें १२ बजे भगवान् श्रीकृष्णका जन्मपर्व विशेष पूजा-अर्चनाके साथ सम्पन्न होता है तथा उसके दूसरे दिन **'दधिकाँदो-महोत्सव'** सम्पन्न होता है। भाद्रपद शुक्लपक्षकी षष्ठीके बाद पड़नेवाले रविवारको **'बड़ा रविवार'** कहते हैं, इस दिन सूर्यकुण्ड (दर्शन नगर)-पर स्नान-पूजनकर भगवान् सूर्यको अर्घ्य दिया जाता है। भाद्रपद शुक्लपक्षकी एकादशीको श्रीसरयूतटपर भगवान् श्रीजानकीरमणजीका **'नौकाविहार-उत्सव'** गाने-बजानेके साथ सम्पन्न होता है। भाद्रपद शुक्लपक्षकी द्वादशीको भगवान् वामनरूपमें प्रकट हुए थे। अतः इस दिन वामनद्वादशीका उत्सव मनाया जाता है। यथा—

श्रोणायां श्रवणद्वादश्यां मुहूर्तेऽभिजिति प्रभुः।
सर्वे नक्षत्रताराद्याश्चक्रुस्तज्जन्म दक्षिणम्॥

(श्रीमद्भा० ८।१८।५)

आश्विनमासके कृष्णपक्षमें जो लोग गयाश्राद्ध करने जाते हैं। वे

श्रीअयोध्याजीमें श्राद्ध करके ही आगे बढ़ते हैं। **नवरात्र**में माँ भगवती दुर्गा एवं श्रीरामजीकी उपासना होती है। यहाँ **श्रीरामलीला, दशहरा, श्रीभरतमिलाप** आदि उत्सव बड़े धूम-धामसे मनाये जाते हैं।

शरत्पूर्णिमाको श्रीसीतारामजी चाँदनी रात्रिमें बाहर पधारते हैं, क्षीरका भोग लगता है। कार्तिकमासमें यहाँ प्रयागमें माघमासकी भाँति एक मासका कल्पवास होता है। कार्तिक कृष्ण चतुर्दशीको **श्रीहनुमज्जयन्ती** मनायी जाती है—

स्वात्यां कुजे शैवतिथौ तु कार्तिके
कृष्णेऽञ्जनागर्भत एव साक्षात्।
मेषे कपीट्प्रादुरभूच्छिवः स्वयं
व्रतादिना तत्र तदुत्सवं चरेत्॥

(श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर ८१)

श्रीहनुमानगढ़ी एवं अन्यत्र नवाह्नपाठ एवं कीर्तनके साथ रात्रिमें १२ बजे जन्मोत्सवकी धूम रहती है।

दूसरे दिन दीपमालिका मन्दिर-मन्दिर एवं घर-घरमें होती है। कार्तिकशुक्ल प्रतिपदाको **अन्नकूट-उत्सव** बड़े उत्साहसे किया जाता है। अन्तिम दिन यमथला तीर्थमें यमद्वितीया होती है।

कार्तिक शुक्लपक्षमें **अक्षयनवमी** तिथिको लाखों लोग चौदह कोसकी परिक्रमा करते हैं। मान्यता है कि वर्षभरके पाप इस दिन परिक्रमा एवं स्नान-दानसे क्षय होते हैं एवं अक्षय पुण्योंकी प्राप्ति होती है। देवोत्थानी एकादशीको भी लाखों लोग पंचक्रोशीपरिक्रमा करते हैं।

'पंचकोश करत घोर वज्रपाप कटिहैं।'

एकादशी-उद्यापन एवं **श्रीतुलसीविवाहमहोत्सव** भी बड़ी धूम-धामसे मनाये जाते हैं। **कार्तिकमासकी पूर्णिमा**को यहाँपर लाखों श्रद्धालुजन सरयूके पावन जलमें स्नान करते हैं। उस समयका दृश्य बड़ा ही मनोहारी होता है।

मार्गशीर्ष (अगहन)-में शुक्लपक्ष पंचमीको विधिवत्

श्रीसीतारामविवाह-महोत्सव एवं **श्रीरामकलेवा** अत्यन्त हर्षोल्लाससे मनाये जाते हैं। एकादशीको श्रीगीताजयन्ती पूजा-पाठ, प्रवचनके रूपमें मनायी जाती है। सरयूतटपर **श्रीरामायणमेला**का आयोजन होता है।

माघमासमें मकरसंक्रान्ति स्नान-दानके पर्वके रूपमें तथा वसन्तपंचमी माँ सरस्वतीकी जयन्तीके रूपमें संस्कृत विद्यालयोंमें श्रीसरस्वतीजीके पूजन-पाठ, प्रवचनके साथ छात्र एवं अध्यापक मनाते हैं।

फाल्गुनमें **महाशिवरात्रि**को श्रीनागेश्वरनाथजी, श्रीक्षीरेश्वरनाथजी एवं श्रीचारधाम मन्दिरमें श्रीरामेश्वर-पूजन, अभिषेक तथा सायं विभिन्न स्थलोंमें श्रीशिव-पार्वतीविवाह धूमधामसे मनाते हैं।

फाल्गुन शुक्ल एकादशीसे **फाग-महोत्सव** एवं होलिकादाहके कार्यक्रम उत्साहपूर्वक होते हैं। ये सभी व्रत एवं पर्वोत्सव शरीर एवं मनकी शुद्धि तथा आपसी मैत्री एवं प्रेम-श्रद्धाकी दृष्टिसे मनाये जाते हैं। प्राचीन रसिक संतोंने अष्टयामपूजा एवं विभिन्न महोत्सवोंके लिये अनेक ललित तथा भावपूर्ण पदोंकी रचना की है। जैसे—

'निरखु सखी बाजत आनन्द बधाई।'
'मिथिलापुर नौबत बाजि रही।'
'प्यारी बाजी बधाई मिथिलापुर सुखदाई।'
'सखी फूल बँगला आई बहार।'
'सजनी रथपर दोउ सोहि रहे।'
'झूलें दोऊ मनके मोहनहार।'
'प्रीतम रसरंग बहार फागुन आय गई।'
'सखी री मनको भाये छयल बनरा बन आय।'

श्रीभगवान् अनन्त हैं। उनकी कथा, लीला और महोत्सव भी अनन्त हैं—***'हरि अनंत हरिकथा अनंता'*** के अनुसार कुछ व्रत-पर्वोत्सवोंका यहाँ दिग्दर्शन कराया गया है।

अयोध्याके सप्तहरि

अयोध्यामें भगवान् श्रीहरि (विष्णु)-के सात अतिविशिष्ट विग्रह प्राचीनकालसे प्रतिष्ठित हैं। जिनकी कथाएँ और यात्रा-दर्शनका विशेष माहात्म्य रुद्रयामल-तन्त्रके अयोध्याखण्ड आदिमें विस्तारसे वर्णित है। आज भी श्रद्धालु स्त्री-पुरुष बड़ी श्रद्धासे इनका दर्शन करते हैं।

अयोध्याके सप्तहरि हैं—**१. गुप्तहरि, २. चक्रहरि, ३. विष्णुहरि, ४. चन्द्रहरि, ५. धर्महरि, ६. बिल्वहरि, ७. पुण्यहरि**। इनका विशेष विवरण एवं वर्तमान स्थिति इस प्रकार है—

१-श्रीगुप्तहरि—अयोध्यासे लगभग १४ कि०मी० पश्चिम सरयू-किनारे गुप्तारघाटके पास गुप्तहरिका मन्दिर है। एक बार दैत्योंसे पराजित देवताओंको शक्ति प्रदान करनेके लिये इसी स्थानपर भगवान् श्रीहरिने गुप्त रूपसे तपस्या की थी। जिससे कालान्तरमें देवोंको विजय प्राप्त हुई। तत्पश्चात् भगवान् श्रीहरिकी आज्ञासे वे सभी दैवीय शक्तियाँ श्रीगुप्तहरिका पूजन करते हुए यहाँ निवास करने लगीं।

२-श्रीचक्रहरि—श्रीगुप्तहरिके निकट ही श्रीचक्रहरि प्रतिष्ठित हैं। यहाँ एक बार भगवान् विष्णुका दिव्य आयुध सुदर्शनचक्र गिरा था, उसी स्थानपर श्रीचक्रहरि प्रतिष्ठित हैं।

उक्त दोनों स्थानोंके दर्शनसे मनुष्योंके सभी पाप-ताप शान्त हो जाते हैं। यहाँ भी सम्पूर्ण कार्तिकमास यात्रा-दर्शनका विशेष माहात्म्य है। श्रीनिर्मोही अखाड़ेकी बैठकपर यहाँ एक अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण स्थान है, उसीके मुख्य द्वारपर एक ही शिलालेखमें उक्त दोनों श्रीगुप्तहरि (९७) एवं श्रीचक्रहरि (९८) नाम उट्टंकित हैं।

३-श्रीविष्णुहरि—विष्णुशर्मा नामक एक ब्राह्मणकी भावपूर्ण स्तुतिसे प्रसन्न हुए श्रीहरिने उन्हें पातालगंगाके जलसे अभिषिक्त करके निष्पाप एवं भक्तिसम्पन्न बनाया और उनकी प्रार्थनापर 'विष्णुहरि' नामसे यहीं स्थित हो गये। यहाँ कार्तिक शुक्ल दशमीसे पूर्णिमातक यात्रा-दर्शनका विशेष माहात्म्य है। धनयक्षकुण्डके पश्चिममें स्थित श्रीविष्णुहरिका मन्दिर और शिलालेख (७०) लगभग १९३० ई०में सरयूजीकी बाढ़में विलीन हो गया। अब उसके स्थानपर पासमें श्रीविष्णुहरिका एक नवीन मन्दिर स्थापित है।

४-श्रीचन्द्रहरि—चन्द्रदेवकी तपस्यासे सन्तुष्ट हुए भगवान् श्रीहरिने उन्हें यहाँ दर्शन दिया और उनकी प्रार्थनापर 'चन्द्रहरि' नामसे यहीं विराजमान हो गये। यहाँ ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमाको यात्रा-दर्शनका विशेष माहात्म्य है। स्वर्गद्वारके निकट ही श्रीचन्द्रहरि प्रतिष्ठित हैं। इनका शिलालेख (८०) चन्द्रहरिमन्दिरके द्वारकी बायीं ओर दीवालसे लगा है।

५-श्रीधर्महरि—भक्तप्रवर धर्मकी स्तुतिसे प्रसन्न हुए श्रीहरिने उन्हें स्वरूप-साक्षात्कार कराया और उनकी प्रार्थनापर 'धर्महरि' नामसे विराजमान हुए। हरिशयनी एकादशीके दिन इस तीर्थके दर्शन-यात्राका विशेष माहात्म्य है। स्वर्गद्वारपर चित्रगुप्तके निकट ही श्रीधर्महरि भी प्रतिष्ठित हैं। इनका शिलालेख (८२) बेतिया मन्दिरके पास चित्रगुप्त मन्दिरके सामने स्थापित है।

६-श्रीविल्वहरि—ऋषियोंका उपहास करनेवाले रूपगर्वोन्मत्त बिल्व नामक गन्धर्वको नारदजीके शापवश मिली महिषयोनिसे यहीं उद्धार हुआ था। उसीने भक्तिपूर्वक विल्वहरिदेवकी स्थापना की।

यहींपर महाराज श्रीदशरथजीका दाह-संस्कार स्थान है। पद्मपुराणके अनुसार यहाँके दर्शन-पूजनसे शनि ग्रहकी बाधा समाप्त होती है। यहाँ वैशाख अमावस्याको यात्रा-दर्शनका विशेष माहात्म्य है।

शास्त्रानुसार अयोध्यामें सरयूके पूर्वभागमें स्थित त्रिपुरारि एवं त्रिपुरारिके पूर्व भागमें विल्वहरि स्थित हैं। वर्तमानमें यह तीर्थस्थल पूराबाजारसे पहले है। यहाँपर एक शिवमन्दिरके समीप श्रीविल्वहरिका शिलालेख (१०९) है।

७-श्रीपुण्यहरि— भरतकुण्डसे पूर्वमें 'पुण्यहरि' नामक भगवत्-धाम है, इस तीर्थमें 'पुण्यहरि' नामसे श्रीहरि नित्य विराजमान रहते हैं। इस कुण्डके मृत्तिकालेपनसे रक्तशुद्धि होती है। यहाँ एकादशी एवं रविवारको यात्रा-दर्शनका विशेष माहात्म्य है। पूराबाजारसे रसूलाबाद मार्गपर लगभग ६ कि०मी० पूर्वमें यह स्थान है। पुनहर व पुनहद नामसे ग्राम प्रसिद्ध है। श्रीपुण्यहरिके शिलालेख (१११)-की सुरक्षा अत्यन्त आवश्यक है।

सम्राट् विक्रमादित्यद्वारा निर्मित
अयोध्याके पाँच प्राचीन मन्दिर

१. श्रीरामजन्मभूमिमन्दिर (प्रसिद्ध)—

यहाँ भगवान् श्रीरामका जन्म हुआ था। यहाँ कसौटी पत्थरके बने चौरासी स्तम्भों तथा सात कलशोंवाला सम्राट् विक्रमादित्यद्वारा बनवाया विशाल मन्दिर स्थापित था। जिसे १५२८ ई० में मुगल बादशाह बाबरके सेनापति मीरबाँकीने ध्वस्त कर दिया था। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभागद्वारा किये गये उत्खननमें वहाँ हिन्दू देवी-देवताओंकी मूर्तियाँ, प्रतीक और स्तम्भ प्राप्त हुए हैं, जिसके आधारपर वहाँ एक भव्य मन्दिर था, इस बातकी पुष्टि हुई। अब वहाँ सर्वोच्च न्यायालयके आदेशानुसार मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराघवेन्द्रसरकारके भव्य एवं गरिमामय मन्दिरके निर्माणका मार्ग प्रशस्त हो गया है। (श्रीराम जन्मभूमिके विषयमें विस्तृत विवरण पृ० ७२, ७४ एवं ७५ पर भी दिया गया है)

२. रत्नसिंहासन मन्दिर (कनकभवनके निकट)—

जन्मस्थानके पास रत्नमण्डप ही रत्नसिंहासन मन्दिर है। यहाँ भगवान् श्रीरामका राज्याभिषेक हुआ था। यहाँ विक्रमादित्यकालीन तीन मूर्तियाँ है। यह स्थान कनकभवनके निकट दक्षिणमें है। दुर्भाग्यसे यह स्थान अपनी स्वतन्त्र पहचान खोता जा रहा है।

३. कनकभवन (प्रसिद्ध)—

यह श्रीराम-जानकीका विहारस्थल है। सोनेका यह महल माता कैकेयीने सीताजीको मुँहदिखाईमें दिया था।

अयोध्याके राजवंशके पराभवके बाद कनकभवन भी जर्जर होकर ढह गया। महाराज विक्रमादित्यने ५७ ई०पूर्व कनकभवनका पुनः निर्माण करवाया। उसे लगभग ११वीं शती ई० में यवनोंने ध्वस्त कर

दिया। वर्तमान कनकभवनका निर्माण ओरछानरेश सवाई महेन्द्र श्रीप्रतापसिंहकी धर्मपत्नी महारानी वृषभानुकुँवरिद्वारा सन् १८९१ ई०में करवाया गया। (कनकभवनके विषयमें विस्तृत विवरण पृ० ३७ पर भी दिया गया है)

४. लक्ष्मण मन्दिर, सहस्त्रधारातीर्थ (लक्ष्मणघाटपर)—

यहाँ रामाज्ञासे श्रीलक्ष्मणजी शरीर छोड़ परमधाम पधारे थे। यहाँ मन्दिरमें शेषावतार लक्ष्मणजीकी ५ फुट ऊँची चतुर्भुज मूर्ति है। यह मूर्ति सामने कुण्डमें पायी गयी थी। लक्ष्मणघाटपर यह मन्दिर लक्ष्मणकिलाके निकट स्थित है। नागपंचमी एवं पूरे वैशाख मासमें यहाँ विशेष भीड़ रहती है।

५. बड़ी देवकाली [शीतलादेवी] (दुर्गाकुण्डपर)—

इन्हें भगवान् श्रीरामचन्द्रजीकी कुलदेवी कहा जाता है, द्वापरयुगमें सूर्यवंशी महाराज सुदर्शनद्वारा यहाँ एक मन्दिरकी स्थापना की गयी थी। कालान्तरमें सम्राट् विक्रमादित्यद्वारा यहाँपर शालग्रामशिलामय त्रिदेवियोंकी स्थापना की गयी। यहाँ एक ही शिलामें महाकाली, महालक्ष्मी एवं महासरस्वती शक्तियन्त्रसहित अंकित हैं। अयोध्याके इस आदिशक्तिपीठपर आज भी अयोध्यावासी बड़ी श्रद्धा रखते हैं। यहाँ एक जलसे परिपूर्ण सरोवर (कुण्ड) भी है। २००२ ई० में मन्दिर एवं सरोवरका जीर्णोद्धार किया गया है। यह स्थान फैजाबाद चौकसे आग्नेय (दक्षिणपूर्व)-कोणमें स्थित है।

एक **छोटी देवकाली** नामका भी प्रसिद्ध मन्दिर अयोध्यामें है। जो वस्तुतः गिरिजा (अथवा ईशानीदेवी)-का मन्दिर है। इस विग्रहकी स्थापना त्रेतायुगमें श्रीसीताजीद्वारा की गयी थी, जिसे वे जनकपुरसे अपने साथ लायी थीं। यह स्थान मत्तगजेन्द्र चौराहेके पास सप्तसागरके निकट अयोध्यामें ही है।

श्रीअयोध्यापुरी और मुक्ति

अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः॥

(गरुडपुराण-प्रेतकल्प ३८।५-६)

'अयोध्या, मथुरा, मायापुरी (हरिद्वार), काशी, कांची, अवन्तिका (उज्जैन) और द्वारकापुरी—ये सात पुरियाँ मोक्ष देनेवाली हैं।' अर्थात् जहाँ मृत्यु होनेपर प्राणी फिर मृत्युलोकमें नहीं आता।

इनमें श्रीअयोध्याजीकी विशेष महिमा होनेका कारण यह है कि सातों पुरियोंमें यह आदिपुरी है। दूसरी बात यह है कि और सब पुरियाँ भगवान्के अंग-प्रत्यंग हैं और यह तो ब्रह्मका अधिष्ठानभूत शिरोभाग ही है—

विष्णोः पाद अवन्तिका गुणवती मध्ये च काञ्चीपुरी
नाभौ द्वारवती तथा च हृदये मायापुरी पुण्यदा।
ग्रीवामूलमुदाहरन्ति मथुरां नासाग्रवाराणसी-
मेतद् ब्रह्मपदं वदन्ति मुनयोऽयोध्यापुरीं मस्तके॥

(पद्मपुराण)

स्कन्दपुराणके वैष्णवखण्डान्तर्गत अयोध्यामाहात्म्यमें मोक्षदायिका दिव्यभूमि अयोध्यापुरीकी अप्रतिम महिमा विस्तारसे वर्णित है—

इदं गुह्यतरं क्षेत्रमयोध्याभिधमुत्तमम्।
सर्वेषामेव भूतानां हेतुर्मोक्षस्य सर्वदा॥
अस्मिन् सिद्धाः सदा देवा वैष्णवं व्रतमास्थिताः।
नानालिङ्गधरा नित्यं विष्णुलोकाभिकाङ्क्षिणः॥
अभ्यस्यन्ति परं योगं युक्तप्राणा जितेन्द्रियाः।

यह उत्तम अयोध्या नामक क्षेत्र अतीव गोपनीय है। यह समस्त प्राणियोंकी मुक्तिका हेतु है। इस क्षेत्रमें नित्य विष्णुलोकके अभिलाषी जितेन्द्रिय देवता तथा सिद्धगण नाना रूपोंको धारणकर और प्राणोंको संयत करके सतत वैष्णवव्रतका पालन करते हुए परम योगका अभ्यास करते रहते हैं।

मन्यमाना विष्णुभक्ता विष्णौ सर्वेऽर्पितक्रियाः॥
यथा मोक्षमिहायान्ति नान्यत्र हि तथा क्वचित्।

अथ श्रेष्ठतमं क्षेत्रं यस्माच्च वसतिर्हरेः॥
महाक्षेत्रमिदं यस्मादयोध्याभिधमुत्तमम्॥

ज्ञानी विष्णुभक्त विष्णुको समस्त क्रियाकलापोंका अर्पण करके इस क्षेत्रमें जिस प्रकारसे मोक्षलाभ प्राप्त करते हैं ऐसा अन्य क्षेत्रमें सम्भव नहीं है। अयोध्या एक महाक्षेत्र है। स्वयं श्रीहरि यहाँ निवास करते हैं। यह क्षेत्र सर्वोत्तम है। इस महाक्षेत्र अयोध्याकी सेवाद्वारा जैसा मोक्ष प्राप्त होता है, वैसा अन्यत्र कहीं नहीं मिलता।

विषयासक्तचित्तोऽपि त्यक्तधर्मरतिर्नरः।
इह क्षेत्रे मृतः सोऽपि संसारी न पुनर्भवेत्॥

यदि धर्मनिष्ठाका त्याग कर देनेवाले विषयासक्त संसारी लोग भी इस क्षेत्रमें प्राणत्याग करते हैं, तो उन्हें भी पुनः जन्म नहीं लेना पड़ता।

जन्मान्तरसहस्त्रेषु युञ्जन् योगी न चाप्नुयात्।
तमिहैव परं मोक्षं मरणादपि गच्छति॥

सहस्त्रों जन्मोंके प्रयासद्वारा योगी योगसाधनासे जिस मोक्षकी प्राप्ति नहीं कर पाता, उसी मोक्षको यहाँपर वह देहत्याग करने मात्रसे ही प्राप्त कर लेता है। (स्कन्दपुराण, वैष्ण० अयो० ८। ८३-९८)

गोस्वामी श्रीतुलसीदासजीने श्रीरामचरितमानसमें साकेतधाम—अयोध्याकी महिमाका वर्णन करते हुए कहा है—

राम धामदा पुरी सुहावनि। लोक समस्त बिदित अति पावनि॥
चारि खानि जग जीव अपारा। अवध तजें तनु नहिं संसारा॥

(रामचरितमानस, बालकाण्ड ३४। ३-४)

'यह शोभायमान अयोध्यापुरी श्रीरामचन्द्रजीके परमधामकी देनेवाली है, सब लोकोंमें प्रसिद्ध है और अत्यन्त पवित्र है। जगत्में [अण्डज, स्वेदज, उद्भिज्ज और जरायुज] चार खानि (प्रकार) के अनन्त जीव हैं, इनमेंसे जो कोई भी अयोध्याजीमें शरीर छोड़ते हैं, वे फिर संसारमें नहीं आते (जन्म-मृत्युके चक्रसे छूटकर भगवान्‌के परमधाममें निवास करते हैं)।'

कैसा भी जीव हो, वह यहाँ श्रीअयोध्याजीमें मरनेसे भवसागर पार हो जाता है और रामधाम (साकेतधाम)-को प्राप्त होता है। यथा—

अस्यां मृताश्च वैकुण्ठमूर्ध्वं गच्छन्ति मानवाः।
कृमिकीटपतङ्गाश्च म्लेच्छाः संकीर्णजातयः॥

कौमोदकीकराः सर्वे प्रयान्ति गरुडासनाः।
लोकं सान्तानिकं नाम दिव्यभोगसमन्वितम्॥
यद्गत्वा न पतन्त्यस्मिँल्लोके मृत्युमुखे नराः।
माहात्म्यं चाधिकं स्वर्गात् साकेतं नगरं शुभम्॥

(सत्योपाख्यान, पू० सर्ग १९। ३६—३८)

अर्थात् कृमि, कीड़े, पतिंगे, म्लेच्छ आदि सब संकीर्ण जातिके प्राणी यहाँ मरनेपर गदाधारी हो गरुड़पर बैठकर ऊपर वैकुण्ठको जाते हैं। (वहाँसे) दिव्य भोगोंसे युक्त जो सान्तानिक लोक है, उसको प्राप्त होते हैं कि जहाँ जानेपर फिर मृत्युलोकमें मनुष्य नहीं आता। अतः इस शुभ नगर साकेतका माहात्म्य स्वर्गसे अधिक है।

जो भजनानन्दी या सुकृती जीव हैं, वे मुक्त हो जाते हैं और जो मनुष्य अयोध्याजीमें रहकर पाप करते हैं, उनका शरीर छूटनेपर वे फिर यहीं कीट, पतंग आदि योनियोंमें पैदा होते हैं और यहाँ फिर शरीर छूटनेपर सालोक्य मुक्ति उनको मिलती है। श्रीअयोध्याजीमें मृत्यु होनेसे रामधाम प्राप्त हुआ, यह सालोक्य मुक्ति हुई। यदि सरयू-स्नान भी जीवने किया है तो धाममें पहुँचनेपर समीपता भी प्राप्त होती है; यह सामीप्य मुक्ति है। उत्तरकाण्डमें श्रीमुखवचन है कि ***'जा मज्जन ते बिनहि प्रयासा। मम समीप नर पावहिं बासा॥'***

वैष्णव तो सालोक्य एवं सामीप्य मुक्तिको ही अपना परम ध्येय मानते हैं, जिससे वे भगवान्के धाममें उनकी अंतरंग लीलाओंका रसास्वादन करते हुए चिरकालतक सेवा करते रहें। इसी कारण श्रीमद्भागवत(३। २९। १३)-में कहा गया है—***सालोक्यसार्ष्टिसामीप्य-सारूप्यैकत्वमप्युत। दीयमानं न गृह्णन्ति विना मत्सेवनं जनाः॥***

ऐसे निष्काम भक्त, दिये जानेपर भी, मेरी सेवाको छोड़कर **सालोक्य** (भगवान्के नित्यधाममें निवास), **सार्ष्टि** (भगवान्के समान ऐश्वर्यभोग), **सामीप्य** (भगवान्की नित्यसमीपता), **सारूप्य** (भगवान्का-सा रूप) और **सायुज्य** (भगवान्के विग्रहमें समा जाना, उनसे एक हो जाना या ब्रह्मरूप प्राप्त कर लेना) मोक्षतक नहीं लेते।

परिशिष्ट

अयोध्यापुरीके दर्शनकी महिमा

देखत अवधको आनंद।
हरषि बरषत सुमन दिन दिन देवतनिको बृंद॥ १॥
नगर-रचना सिखनको बिधि तकत बहु बिधिबृंद।
निपट लागत अगम, ज्यों जलचरहि गमन सुछंद॥ २॥
मुदित पुरलोगनि सराहत निरखि सुखमाकंद।
जिन्हके सुअलि-चख पियत राम-मुखारबिंद-मरंद॥ ३॥
मध्य ब्योम बिलंबि चलत दिनेस-उडुगन-चंद।
रामपुरी बिलोकि तुलसी मिटत सब दुख-द्वंद॥ ४॥

[गीतावली ७। २३]

अयोध्याका आनन्द देखकर देवतालोग हृदयमें हर्षित हो नित्यप्रति फूलोंकी वर्षा करते हैं॥ १॥

नगरकी रचना सीखनेके लिये ब्रह्माजी उसके तरह-तरहके भेद देखते हैं, परंतु उन्हें यह इस प्रकार अत्यन्त दुर्गम जान पड़ती है, जैसे जलचरको पृथ्वीपर स्वच्छन्द विचरना (क्योंकि ब्रह्माजी मायिक सृष्टिके अधिकारी हैं और यह तो दिव्य रचना है)॥ २॥

जिनके नेत्ररूप भौंरे सुषमाकन्द भगवान् रामको निहारकर उनके मुखकमलका मकरन्द पान करते हैं, उन अयोध्यावासियोंकी वे प्रसन्नतापूर्वक सराहना करते हैं॥ ३॥

तुलसीदासजी कहते हैं—भगवान् रामकी पुरीको देखनेसे सारे दुःख और द्वन्द्व नष्ट हो जाते हैं, अतः सूर्य, तारे और चन्द्रमा भी [उसे देखनेके लिये] मध्य आकाशमें कुछ ठहरकर चलते हैं॥ ४॥

श्रीअयोध्यापुरी-वन्दना

श्रीयम उवाच

अयोध्यायै नमस्तेऽस्तु रामपुर्य्यै नमो नमः।
आद्यायै च नमस्तुभ्यं सत्यायै तु नमो नमः॥
सरय्वावेष्टितायै च नमो मातस्तु ते सदा।
ब्रह्मादिवन्दिते मातर्ऋषिभिः पर्युपासिते॥
रामभक्तप्रिये देवि सर्वदा ते नमो नमः।
ये ध्यायन्ति महात्मानो मनसा पूजयन्ति त्वाम्॥
तेषां नश्यन्ति पापानि ह्याजन्मोपार्जितानि च।
अकारो वासुदेवः स्याद् यकारस्तु प्रजापतिः॥
उकारो रुद्ररूपस्तु त्वां ध्यायन्ति मुनीश्वराः।
सूर्यवंशोद्भवानां तु राज्ञां परमधर्मिणाम्॥

श्रीयमराजजी बोले—'आप अयोध्या देवीको मेरा बारम्बार प्रणाम है। श्रीरामपुरीके लिये मेरा नमस्कार है, नमस्कार है। आप आद्यापुरीके लिये मेरा नमस्कार है। सत्यादेवीके लिये मेरा बारम्बार नमस्कार है। माता! श्रीसरयूद्वारा आवेष्टित आप अवधपुरीको मेरा नित्य प्रणाम है। जो ब्रह्मादिक देवताओंद्वारा वन्दनीय तथा ऋषियोंद्वारा सदा उपासित हैं, ऐसी राम-भक्तोंकी प्यारी अयोध्या देवि! आपको मेरा नित्य प्रणाम है। जो महात्मागण मानसिक पूजन करते हुए आपका नित्य ध्यान करते हैं, उनके जीवनभरके पाप नष्ट हो जाते हैं। आपके नाममें जो अकार है, उससे भगवान् वासुदेवका, यकारसे प्रजापति श्रीब्रह्माजीका तथा उकारसे साक्षात् श्रीशंकरजीका बोध होता है। 'ध्या'से सूचित होता है कि ध्यानपरायण ऋषिगण [ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी] आपका ध्यान करते हैं। परम धार्मिक सूर्यवंशमें होनेवाले समस्त

तेषां सामान्यधात्री त्वं तथा सुकृतिनामपि।
महिमानं न जानन्ति तव देवमुनीश्वराः॥
कथं त्वं ज्ञायसे देवि मन्दैर्बुद्धिविवर्जितैः।
नमस्तेऽस्तु सदा देवि सदा देवि नमो नमः।
नमोऽयोध्ये नमोऽयोध्ये पापं नस्त्वमपाकुरु॥

श्रीअयोध्योवाच

ममेदमष्टकं पुण्यं त्वया भक्त्या तु यत्कृतम्॥
यः पठेत् प्रातरुत्थाय पापं तस्य प्रणश्यति।
प्राप्नोति सकलानर्थान् मया दत्तान् नरः सदा॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले अयोध्याखण्डे श्रीश्रीअयोध्यापुरीवन्दना सम्पूर्णा॥

राजाओंको आप ही धारण करनेवाली हैं और अन्यान्य सुकृती पुरुषोंको भी आप सदासे आश्रय प्रदान करती आयी हैं। आपकी महिमाको मुनिगण और देवसमुदाय भी नहीं जानते, तब हम मन्दभाग्य एवं हीनबुद्धि जन भला आपको कैसे जान सकते हैं। इसलिये हे भगवती! आपके श्रीचरणोंमें मेरा नित्य बारम्बार प्रणाम है। हे अयोध्ये! आपके लिये पुनः-पुनः नमस्कार है। कृपाकर आप हमारे सब पापोंको नष्ट करें।'

श्रीअयोध्यापुरीने कहा—भक्तिपूर्वक तुम्हारे द्वारा बनाया हुआ आठ श्लोकोंवाला यह स्तोत्र जो मनुष्य प्रातःकाल उठकर पढ़ेगा, उसके पाप नष्ट हो जायँगे तथा वह मेरे द्वारा प्रदत्त समस्त अभीष्टोंको सर्वदा प्राप्त करता रहेगा।

॥ इस प्रकार श्रीरुद्रयामलके अन्तर्गत अयोध्याखण्डमें श्रीअयोध्यापुरीवन्दना सम्पूर्ण हुई॥

श्रीअयोध्या-पंचक

याऽयोध्या जगतीतले तु मनुना वैकुण्ठतो ह्यानिता
याचित्वा निजसृष्टिपालनपरं वैकुण्ठनाथं प्रभुम्।
या वै भूमितले निधाय विमला चेक्ष्वाकवे चार्पिता
साऽयोध्या परमात्मनो विजयते धाम्नां परा मुक्तिदा॥ १॥

वैकुण्ठके अधिपति, अपने सृष्टिप्रपंचका पालन करनेमें तत्पर उन प्रभु श्रीहरिसे याचना करके स्वायम्भुव मनु जिसे वैकुण्ठधामसे भूतलपर ले आये थे और जिस विमल पुरीको भूतलपर व्यवस्थापित करके मनुने [अपने वंशज] महाराज इक्ष्वाकुको सौंपा था, जो परमात्मा नारायणके समस्त धामोंमें सर्वोत्तम है, वह मोक्षदायिनी अयोध्यापुरी सर्वोत्कर्षशालिनी है॥ १॥

या चक्रोपरि राजते च सततं वैकुण्ठनाथस्य वै
या वै मानवलोकमेत्य सकलान् दात्री सदा वाञ्छितान्।
या तीर्थानि पुनाति संततमहो वर्वर्ति तीर्थोपरि
साऽयोध्या परमात्मनो विजयते धाम्नां परा मुक्तिदा॥ २॥

जो निरन्तर वैकुण्ठधामाधिपति भगवान् नारायणके चक्रपर विराजमान रहती है, जो इस मनुष्यलोकमें आकर सभी मनोरथोंको सतत पूर्ण कर रही है तथा जो निरन्तर तीर्थोंको पवित्र करनेमें निरत है। अहो! जो सभी तीर्थोंमें सर्वोपरि है, परमात्मा श्रीहरिके समस्त धामोंमें सर्वश्रेष्ठ वह मोक्षदायिनी अयोध्यापुरी सर्वोत्कर्षशालिनी है॥ २॥

यस्यां वैष्णवसज्जनाः सुरसिकाः स्वाचारनिष्ठाः सदा
लीलाधामसुनामरूपदयिताः श्रीरामचन्द्रे रताः।
यस्यां श्रीरघुवंशजः परिकरैः सार्धं सदा राजते
साऽयोध्या परमात्मनो विजयते धाम्नां परा मुक्तिदा॥ ३॥

जहाँपर सुन्दर भगवल्लीला, भगवद्धाम, भगवन्नाम और भगवत्स्वरूपमें प्रीतिभाव रखनेवाले, उत्तम रसिक, अपने वर्णाश्रमोचित आचारके अनुष्ठानमें तत्पर और श्रीरामचन्द्रमें समर्पित चित्तवाले विष्णुभक्त सत्पुरुष, निरन्तर निवास करते हैं और जहाँ रघुवंशी श्रीराम अपने परिकरों (लक्ष्मण-हनुमान् आदि)-के साथ सर्वदा विराजते हैं, जो परमात्मा नारायणके समस्त धामोंमें सर्वोत्तम है, वह मोक्षदायिनी अयोध्यापुरी सर्वोत्कर्षशालिनी है॥ ३॥

यस्यां तीर्थशतं सदा निवसति ह्यानन्ददं पावनं
यस्या दर्शनलालसा मुनिवरा ध्याने रताः सर्वदा।
यस्या भूमिरजस्त्वनादि विबुधा वाञ्छन्ति स्वाभीष्टदं
साऽयोध्या परमात्मनो विजयते धाम्नां परा मुक्तिदा॥ ४॥

जहाँपर निरन्तर आनन्द प्रदान करनेवाले सैकड़ों पावन तीर्थ विद्यमान हैं, जिसके दर्शनकी लालसासे श्रेष्ठ मुनिजन निरन्तर ध्यानयोगका अभ्यास करते हैं, जहाँके भूतलकी अनादि अर्थात् आदि-मध्यान्तहीन चिन्मय धूलिको अपने मनोरथोंको प्रदान करनेवाली जानकर देवगण [उसकी] सर्वदा कामना करते हैं और जो परमात्मा नारायणके सभी धामोंमें सर्वोत्तम है, वह मोक्षदायिनी अयोध्यापुरी सर्वोत्कर्षशालिनी है॥ ४॥

यस्यां भाति प्रमोदकाननवरं रामस्य लीलास्पदं
यत्र श्रीसरितां वरा च सरयू रत्नाचलं शोभते।
ध्येया ब्रह्ममहेशविष्णुमुनिभिर्ह्यानन्ददा सर्वदा
साऽयोध्या परमात्मनो विजयते धाम्नां परा मुक्तिदा॥ ५॥

जहाँ भगवान् श्रीरामकी [ललित] लीलाओंका उत्तम स्थल 'प्रमोदकानन' नामक उद्यान शोभायमान है, जहाँ सरिताओंमें श्रेष्ठ

श्रीसरयू एवं [पर्वतशिरोमणि] रत्नाचल (मणिपर्वत) शोभित हो रहा है, जो आनन्दप्रदायिनी स्थली सर्वदा ब्रह्मा, विष्णु, महेश—इन त्रिदेवों और मुनिजनोंके ध्यानका विषय है और जो परमात्मा नारायणके सभी धामोंमें सर्वोत्तम है, वह मोक्षदायिनी अयोध्यापुरी सर्वोत्कर्षशालिनी है॥ ५॥

यःश्लोकपञ्चकमिदं मनुजः पठेत
ध्यात्वा हृदि प्रतिदिनं रघुनन्दनाङ्घ्री।
हित्वा बहूनि दुरितानि पुरार्जितानि
प्राप्नोत्यभीष्टधनधर्ममथापवर्गम् ॥ ६॥

जो मनुष्य प्रतिदिन अपने हृदयमें रघुनन्दन श्रीरामके चरणयुगलका ध्यान करके इन पाँच श्लोकोंका पारायण करता है, वह पूर्वजन्मोंमें अर्जित समस्त पापोंसे छूटकर धन, धर्म, मोक्षादिरूप अपने अभीष्टको प्राप्त कर लेता है॥ ६॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले अयोध्याखण्डे अयोध्यापञ्चकं सम्पूर्णम्॥

॥ इस प्रकार श्रीरुद्रयामलके अन्तर्गत अयोध्याखण्डमें अयोध्यापंचक पूर्ण हुआ॥

श्रीसरयू-अष्टक

दशरथ उवाच

नमस्ते सरयूदेवि वसिष्ठतनये शुभे।
ब्रह्मादिसकलैर्देवैर्ऋषिभिर्नारदादिभिः॥
सदा त्वं सेविता देवि तथा सुकृतिभिर्नरैः।
मानसाच्च समायाते जगतां पापहारिणि॥
स्मरतां पश्यतां देवि पापनाशे पटीयसी।
ये पिबन्ति जलं देवि त्वदीयं गतमत्सराः॥
स्तनपानं न ते मातुः करिष्यन्ति कदाचन।
मनुप्रभृतिभिर्मान्यैर्मानितासि सदा शुभे॥
त्वत्तीरमरणेनैव त्वन्नामरटनेन च।
ये त्यजन्ति तनुं देवि ते कृतार्था न संशयः॥

राजा बोले—'हे वसिष्ठपुत्री देवी श्रीसरयू! आपको नमस्कार है। शुभे! ब्रह्मा आदि समस्त देवताओं तथा नारदादि ऋषियों एवं पुण्यवान् जनोंद्वारा आप सर्वदा सेवित हैं। देवि! आप मानसरोवरसे आयी हैं और संसारके पापोंको हरनेवाली हैं। दर्शन एवं स्मरण करनेवालोंके समस्त पापोंको नष्ट करनेमें आप परम कुशल हैं। देवि! मत्सर त्यागकर जो आपके जलका पान करते हैं, वे संसारमें पुनः जन्म लेकर माताका दुग्धपान कभी नहीं करते। शुभे! महामान्यवर मनु आदि महाराजाओंद्वारा आप सदासे सम्मानिता हैं। देवि! जो आपके तटपर शरीरत्याग करते हैं अथवा जो जन आपके नामकी रटन लगाते हुए अन्यत्र कहीं भी शरीरत्याग करते हैं, वे अवश्य ही कृतार्थ होते हैं; इसमें कुछ भी संशय नहीं है। देवि! आप

त्वं तु नेत्रोद्भवा देवि हरेर्नारायणस्य हि।
महिमा तव देवैश्च गीयते च मुहुर्मुहुः॥
तत्र का हि मनःशक्तिः स्तवने मानुषस्य च।
त्वत्तीरे सर्वतीर्थानि निवसन्ति चतुर्युगे॥
नमो देवि नमो देवि पुनरेव नमो नमः।
हे वासिष्ठि महाभागे प्रणतं रक्ष बन्धनात्॥

श्रीसरयू उवाच

त्वया कृतमिदं यस्तु ह्यष्टकं च पठेन्मम।
स्नानस्य सर्वतीर्थानां फलमाप्नोति मानवः॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले अयोध्याखण्डे श्रीसरयू-अष्टकं सम्पूर्णम्॥

तो नारायण भगवान्के नेत्र-कमलोंसे उत्पन्न हुई हैं; अतः आपकी महिमाको देवगण बराबर गाते रहते हैं, परंतु पार नहीं पाते। तब मनुष्यकी क्या शक्ति है कि आपकी महिमाका पूर्णतया वर्णन कर सके। चारों युगोंमें ही आपके तटपर समस्त तीर्थ निरन्तर निवास करते हैं। देवि! आपको नमस्कार है, नमस्कार है और बारम्बार नमस्कार है। महाभागे! वासिष्ठि! समस्त बन्धनोंसे मुझ शरणागतकी रक्षा कीजिये।'

श्रीसरयूदेवीने कहा—[हे राजन्!] आपका बनाया हुआ यह सरयू-अष्टक नामक मेरा स्तोत्र जो पढ़ेगा, उस भक्त मनुष्यको समस्त तीर्थोंके स्नानका फल प्राप्त होगा।

॥ इस प्रकार श्रीरुद्रयामलके अन्तर्गत अयोध्याखण्डमें श्रीसरयू-अष्टक सम्पूर्ण हुआ॥

अयोध्यावासकी लालसा

कदा वा साकेते विमलसरयूतीरपुलिने
समासीनः श्रीमद्रघुपतिपदाब्जे हृदि भजन्।
अये राम स्वामिन् जनकतनयावल्लभ विभो
प्रसीदेति क्रोशन्निमिषमिव नेष्यामि दिवसान्॥

साकेतधाम अयोध्यामें निर्मल सरयूके बालुकामय तटपर सुखपूर्वक बैठा हुआ और श्रीमान् रघुनन्दनके चरणारविन्दका अन्तःकरणमें अनुचिन्तन करता हुआ मैं—'हे राम! हे स्वामिन्! हे जनकतनयावल्लभ! हे विभो! आप प्रसन्न होइये'—इस प्रकार कहते हुए, अपने दिनोंको कब क्षणके समान व्यतीत करूँगा।

कदा वा साकेते तरुणतुलसीकाननतले
निविष्टस्तं पश्यन्नविहतविशालोर्ध्वतिलकम्।
अये सीतानाथ स्मृतजनपते दानवजयिन्
प्रसीदेति क्रोशन्निमिषमिव नेष्यामि दिवसान्॥

साकेतधाम अयोध्यामें नवनवायमान तुलसीतरुओंके उपवनमें बैठा हुआ और अखण्ड, विशाल ऊर्ध्व तिलकसे अलंकृत उन (श्रीराम)-को निहारता हुआ मैं—'स्मरण करते ही अपने भक्तका परित्राण करनेवाले और दानवोंको जीत लेनेवाले हे सीतानाथ! आप प्रसन्न होइये'—इस प्रकार कहते हुए, अपने दिनोंको क्षणके समान कब व्यतीत करूँगा।

कदा वा साकेते मणिखचितसिंहासनतले
समासीनं रामं जनकतनयालिङ्गिततनुम्।
अये सीताराम त्रुटितहरधन्वन् रघुपते
प्रसीदेति क्रोशन्निमिषमिव नेष्यामि दिवसान्॥

साकेतधाम अयोध्यामें [बैठा हुआ] मैं जनकनन्दिनी सीताजीसे शोभायमान वामांगवाले एवं मणिरत्नोंसे जटित सिंहासनपर विराजमान [उन श्रीरामसे]—'हे सीतापति राम! शिवधनुषको खण्डित करनेवाले हे रघुनाथ! आप प्रसन्न होइये'—इस प्रकार कहते हुए, अपने दिनोंको क्षणके समान कब व्यतीत करूँगा। **[श्रीरामकर्णामृतम् १। ६३—६५]**

बसूँगा सदा जाय नगरी अयोध्या

अवध राम सीता पुकारा करूँगा।
युगलमूर्ति निसि-दिन निहारा करूँगा॥
बसूँगा सदा जाय नगरी अयोध्या।
वहीं वास सरयू किनारा करूँगा॥
सदा मंदिरोंमें सुकीर्तन करूँगा।
पदामृत प्रभुका उतारा करूँगा॥
पाकर वहाँ रामभक्तोंकी जूठन।
चरणरज विमल सीस धारा करूँगा॥

अन्तिम लालसा

झाँकी देखिय अवधपुरीकी।
अन्तरिक्ष नभ में जहँ व्यापी, पावनि चरन-धूरि सिय-पीकी॥
मन्दिर-पाँति बढ़ावति शोभा, हाट बाट प्रत्येक गली की।
कीजै लोचन तृप्त देखि छबि, रघुनन्दन सँग जनक-लली की॥
सन्त अनेक पुरी सेवत यहि, जिनकी विषयवासना फीकी।
ज्ञानप्रकाश पसारि लेत हरि, छन महँ तमोवृत्ति जगती की॥
सेइय सदा सुखद सरजू सरि, छटा लसत मन्दिर-अवली की।
तरल तरंग उठत सोहत सोइ, सीढ़ी-सी जनु मुक्तिथली की॥
बसे प्रयाग श्रमे ब्रज-मण्डल, गली लखी शिव के काशी की।
अवधपुरी ही के सेवन से, जरनि मिटति है जन के जी की॥
युगल नाम सुख रटत निरंतर, श्रवन सुनत लीला उनही की।
लखत युगलछबि मुंदत नयन सन, लगी सुरति श्रीअवधधनी की॥
निकसैं प्रान मातु-सरजूतट, जो पै है करनी कछु नीकी।
यहै एक लालसा रही अब, 'सीताराम अवधबासी' की॥

—श्रीअवधबासी सीताराम (भूप)

श्रीरामरक्षास्तोत्रम्

'श्रीरामरक्षाकवच' की सिद्धिकी विधि

नवरात्रमें प्रतिदिन नौ दिनोंतक ब्राह्म-मुहूर्तमें नित्यकर्म तथा स्नानादिसे निवृत्त हो शुद्ध वस्त्र धारणकर कुशाके आसनपर सुखासन लगाकर बैठ जाइये। भगवान् श्रीरामके कल्याणकारी स्वरूपमें चित्तको एकाग्र करके इस महान् फलदायी स्तोत्रका कम-से-कम ग्यारह बार और यदि यह न हो सके तो सात बार नियमित रूपसे प्रतिदिन पाठ कीजिये। पाठ करनेवालेकी श्रीरामकी शक्तियोंके प्रति जितनी अखण्ड श्रद्धा होगी, उतना ही फल प्राप्त होगा। पूर्ण शान्ति और विश्वाससे इसका जाप होना चाहिये, यहाँतक कि यह कण्ठस्थ हो जाय।

विनियोग:

अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषिः श्रीसीता-रामचन्द्रो देवता अनुष्टुप् छन्दः सीता शक्तिः श्रीमान् हनुमान् कीलकं श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे रामरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः।

ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं
पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम्।
वामाङ्कारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं
नानालङ्कारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम्॥

स्तोत्रम्

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम्।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्॥ १॥
ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम्।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम्॥ २॥

सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तंचरान्तकम्।
स्वलीलया जगत्त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम्॥ ३ ॥
रामरक्षां पठेत् प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम्।
शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः॥ ४ ॥
कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः॥ ५ ॥
जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः॥ ६ ॥
करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित्।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः॥ ७ ॥
सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः।
ऊरू रघूत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत्॥ ८ ॥
जानुनी सेतुकृत् पातु जङ्घे दशमुखान्तकः।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः॥ ९ ॥
एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत्।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत्॥ १०॥
पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः॥ ११॥
रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन्।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति॥ १२॥
जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाभिरक्षितम्।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः॥ १३॥

वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत्।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम्॥ १४॥
आदिष्टवान् यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः।
तथा लिखितवान् प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः॥ १५॥
आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम्।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान् स नः प्रभुः॥ १६॥
तरुणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ॥ १७॥
फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ॥ १८॥
शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम्।
रक्षःकुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ॥ १९॥
आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशा-
वक्षयाशुगनिषङ्गसङ्गिनौ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणा-
वग्रतः पथि सदैव गच्छताम्॥ २०॥
संनद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा।
गच्छन् मनोरथान् नश्च रामः पातु सलक्ष्मणः॥ २१॥
रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः॥ २२॥
वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः॥ २३॥

इत्येतानि जपन् नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः॥ २४॥
रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम्।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः॥ २५॥
रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम्।
राजेन्द्रं सत्यसंधं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्तिं
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम्॥ २६॥
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥ २७॥
श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम
श्रीराम राम शरणं भव राम राम॥ २८॥
श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये॥ २९॥
माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालु-
र्नान्यं जाने नैव जाने न जाने॥ ३०॥

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम्॥ ३१॥
लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं
राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं
श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये॥ ३२॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥ ३३॥
कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्॥ ३४॥
आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥ ३५॥
भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम्।
तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम्॥ ३६॥
रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर॥ ३७॥
राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्त्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने॥ ३८॥

॥ इति श्रीबुधकौशिकमुनिविरचितं श्रीरामरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

लघुरामरक्षास्तोत्रम्

ॐ रामरक्षास्तोत्रस्य श्रीमहर्षिर्विश्वामित्रऋषिः। श्रीरामो देवता। अनुष्टुप्छन्दः विष्णुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

महादेव उवाच

अतसीपुष्पसङ्काशं पीतवाससमच्युतम्।
ध्यात्वा वै पुण्डरीकाक्षं श्रीरामं विष्णुमव्ययम्॥ १ ॥
पातु मे हृदयं रामः श्रीकण्ठः कण्ठमेव च।
नाभिं पातु मखत्राता कटिं मे विश्वरक्षकः॥ २ ॥
करौ पातु दाशरथिः पादौ मे विश्वरूपधृत्।
चक्षुषी पातु वै देवस्सीतापतिरनुत्तमः॥ ३ ॥
शिखां मे पातु विश्वात्मा कर्णौ मे पातु कामदः।
पार्श्वयोस्तु सुरत्राता कालकोटिदुरासदः॥ ४ ॥
अनन्तः सर्वदा पातु शरीरं विश्वनायकः।
जिह्वां मे पातु पापघ्नो लोकशिक्षाप्रवर्त्तकः॥ ५ ॥
राघवः पातु मे दन्तान् केशान् रक्षतु केशवः।
सक्थिनी पातु मे दत्तविजयो नाम विश्वसृक्॥ ६ ॥
एतां रामबलोपेतां रक्षां यो वै पुमान् पठेत्।
स चिरायुः सुखी विद्वान् लभते दिव्यसंपदम्॥ ७ ॥
रक्षां करोतु भूतेभ्यः सदारक्षा तु वैष्णवी।
रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति यः स्मरेत्॥ ८ ॥
विमुक्तः स नरः पापान्मुक्तिं प्राप्नोति शाश्वतीम्।
वसिष्ठेन त्विदं प्रोक्तं गुरवे विष्णुरूपिणे॥ ९ ॥
ततो मे ब्रह्मणः प्राप्तं मयोक्तं नारदं प्रति।
नारदेन तु भूलोके प्रापितं सुजनेष्विह॥ १० ॥
सुप्त्वा वाथ गृहे वापि मार्गे गच्छन्त एव वा।
ये पठन्ति नरश्रेष्ठास्ते नराः पुण्यभागिनः॥ ११ ॥

इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे उमापतिनारदसंवादे रामरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

एकश्लोकि रामायणम्

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनं
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम्।
बालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनं
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननमेतद्धि रामायणम्॥

(श्रीअग्निवेशस्य मूलरामायणे)

प्रथम श्रीरामचन्द्रजीका तपोवनादिमें जाना फिर कनकमृग मारीचका मारा जाना, तदुपरान्त सीताजीका हरण, जटायुका मरण, सुग्रीवसे वार्तालाप, वालीका वध, समुद्रोल्लंघन, लंकाका दाह और सबके पश्चात् रावण-कुम्भकर्णादिका मारा जाना—बस, इतनी ही रामायण है।

एकश्लोकि आनन्दरामायणम्

आदौ रावणमर्दनं द्विजगिरा तीर्थाटनं सीतया
साकेते दशवाजिमेधकरणं पत्न्या विलासाटनम्।
स्त्रीपुत्रग्रहणं स्नुषार्थमटनं पृथ्व्याश्च संरक्षणं
रामार्चादिनिरूपणं दयितया स्वीयं स्थलारोहणम्॥

(श्रीआनन्दरामायण-सारकाण्ड १।२)

आनन्दरामायणके (सारकाण्डमें) आविर्भावसे लेकर रावण-वधतककी कथा, (यात्राकाण्डमें) कुम्भोदर ऋषिकी प्रेरणासे सीताके साथ विविध तीर्थोंकी यात्रा, (यागकाण्डमें) अयोध्यामें दस अश्वमेधयज्ञोंका सम्पादन, (विलास-काण्डमें) देवी सीताके साथ सम्पन्न माधुर्यमयी लीलाएँ, (जन्मकाण्डमें) लव-कुश आदिकी उत्पत्तिकी कथाएँ, (विवाहकाण्डमें) लव-कुश तथा उर्मिला, माण्डवी एवं श्रुतकीर्तिके पुत्रोंके विवाह-समारोहका वर्णन, (राज्यकाण्डमें) धर्मपूर्वक पृथ्वीका संरक्षण, (मनोहरकाण्डमें) रामार्चासम्बन्धी विषयोंका प्रतिपादन, (पूर्णकाण्डमें) सीतासहित भगवान्‌का स्वधाम-गमनका वर्णन है।

श्रीरामचरितमानस-महिमा

रामचरितमानस एहि नामा। सुनत श्रवन पाइअ बिश्रामा॥
मन करि बिषय अनल बन जरई। होइ सुखी जौं एहिं सर परई॥
रामचरितमानस मुनि भावन। बिरचेउ संभु सुहावन पावन॥
त्रिबिध दोष दुख दारिद दावन। कलि कुचालि कुलि कलुष नसावन॥
रचि महेस निज मानस राखा। पाइ सुसमउ सिवा सन भाषा॥
तातें रामचरितमानस बर। धरेउ नाम हियँ हेरि हरषि हर॥
कहउँ कथा सोइ सुखद सुहाई। सादर सुनहु सुजन मन लाई॥

(श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड ३५।७—१३)

श्रीरामचरितमानस-कथासार

[काकभुशुण्डि-गरुड़-संवाद]

प्रथमहिं अति अनुराग भवानी। रामचरित सर कहेसि बखानी॥
पुनि नारद कर मोह अपारा। कहेसि बहुरि रावन अवतारा॥
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई। तब सिसु चरित कहेसि मन लाई॥

बालचरित कहि बिबिध बिधि मन महँ परम उछाह।
रिषि आगवन कहेसि पुनि श्रीरघुबीर बिबाह॥

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा। पुनि नृप बचन राज रस भंगा॥
पुरबासिन्ह कर बिरह बिषादा। कहेसि राम लछिमन संवादा॥
बिपिन गवन केवट अनुरागा। सुरसरि उतरि निवास प्रयागा॥
बालमीक प्रभु मिलन बखाना। चित्रकूट जिमि बसे भगवाना॥
सचिवागवन नगर नृप मरना। भरतागवन प्रेम बहु बरना॥
करि नृप क्रिया संग पुरबासी। भरत गए जहँ प्रभु सुख रासी॥
पुनि रघुपति बहु बिधि समुझाए। लै पादुका अवधपुर आए॥

भरत रहनि सुरपति सुत करनी। प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि बरनी॥
कहि बिराध बध जेहि बिधि देह तजी सरभंग।
बरनि सुतीछन प्रीति पुनि प्रभु अगस्ति सतसंग॥
कहि दंडक बन पावनताई। गीध मइत्री पुनि तेहिं गाई॥
पुनि प्रभु पंचबटीं कृत बासा। भंजी सकल मुनिन्ह की त्रासा॥
पुनि लछिमन उपदेस अनूपा। सूपनखा जिमि कीन्हि कुरूपा॥
खर दूषन बध बहुरि बखाना। जिमि सब मरमु दसानन जाना॥
दसकंधर मारीच बतकही। जेहि बिधि भई सो सब तेहिं कही॥
पुनि माया सीता कर हरना। श्रीरघुबीर बिरह कछु बरना॥
पुनि प्रभु गीध क्रिया जिमि कीन्ही। बधि कबंध सबरिहि गति दीन्ही॥
बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा। जेहि बिधि गए सरोबर तीरा॥
प्रभु नारद संबाद कहि मारुति मिलन प्रसंग।
पुनि सुग्रीव मिताई बालि प्रान कर भंग॥
कपिहि तिलक करि प्रभु कृत सैल प्रबरषन बास।
बरनन बर्षा सरद अरु राम रोष कपि त्रास॥
जेहि बिधि कपिपति कीस पठाए। सीता खोज सकल दिसि धाए॥
बिबर प्रबेस कीन्ह जेहि भाँती। कपिन्ह बहोरि मिला संपाती॥
सुनि सब कथा समीरकुमारा। नाघत भयउ पयोधि अपारा॥
लंकाँ कपि प्रबेस जिमि कीन्हा। पुनि सीतहि धीरजु जिमि दीन्हा॥
बन उजारि रावनहि प्रबोधी। पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी॥
आए कपि सब जहँ रघुराई। बैदेही की कुसल सुनाई॥
सेन समेति जथा रघुबीरा। उतरे जाइ बारिनिधि तीरा॥
मिला बिभीषन जेहि बिधि आई। सागर निग्रह कथा सुनाई॥
सेतु बाँधि कपि सेन जिमि उतरी सागर पार।
गयउ बसीठी बीरबर जेहि बिधि बालिकुमार॥

निसिचर कीस लराई बरनिसि बिबिध प्रकार।
कुंभकरन घननाद कर बल पौरुष संघार॥
निसिचर निकर मरन बिधि नाना। रघुपति रावन समर बखाना॥
रावन बध मंदोदरि सोका। राज बिभीषन देव असोका॥
सीता रघुपति मिलन बहोरी। सुरन्ह कीन्हि अस्तुति कर जोरी॥
पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्ह समेता। अवध चले प्रभु कृपा निकेता॥
जेहि बिधि राम नगर निज आए। बायस बिसद चरित सब गाए॥
कहेसि बहोरि राम अभिषेका। पुर बरनत नृपनीति अनेका॥
कथा समस्त भुसुंड बखानी। जो मैं तुम्ह सन कही भवानी॥

(श्रीरामचरितमानस, उत्तरकाण्ड ६४।७—६८।७)

श्रीरामायणजी की आरती

आरति श्रीरामायनजी की, कीरति कलित ललित सिय पी की॥ टेक॥
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद, बालमीक बिग्यान-बिसारद।
सुक सनकादि सेष अरु सारद, बरनि पवनसुत कीरति नीकी॥ १॥
गावत बेद पुरान अष्टदस, छओ सास्त्र सब ग्रंथन को रस।
मुनि जन धन संतन को सरबस, सार अंस संमत सबही की॥ २॥
गावत संतत संभु भवानी, अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी।
ब्यास आदि कबिबर्ज बखानी, कागभुसुंडि गरुड के ही की॥ ३॥
कलिमल-हरनि बिषय रस फीकी, सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की।
दलन रोग भव मूरि अमी की, तात मात सब बिधि तुलसी की॥ ४॥

ब्रह्माजीद्वारा रामावतारहेतु प्रार्थना

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंता॥
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानइ कोई।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सोई॥

जय जय अबिनासी सब घट बासी ब्यापक परमानंदा।
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा॥
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगत मोह मुनिबृंदा।
निसि बासर ध्यावहिं गुनगन गावहिं जयति सच्चिदानंदा॥

जेहिं सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई संग सहाय न दूजा।
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा॥
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरूथा।
मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी सरन सकल सुरजूथा॥
सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहुँ कोउ नहिं जाना।
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना॥
भव बारिधि मंदर सब बिधि सुंदर गुनमंदिर सुखपुंजा।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा॥

जानि सभय सुर भूमि सुनि बचन समेत सनेह।
गगनगिरा गंभीर भइ हरनि सोक संदेह॥

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा। तुम्हहि लागि धरिहउँ नर बेसा॥
अंसन्ह सहित मनुज अवतारा। लेहउँ दिनकर बंस उदारा॥

(श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड)

श्रीरामावतार-स्तुति

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी॥
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी॥

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता॥
करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता॥

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा॥

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार॥

(श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड)

श्रीसीतावतार-स्तुति

भई प्रगट कुमारी भूमि-विदारी, जन हितकारी भयहारी।
अतुलित छबिधारी मुनि-मनहारी जनकदुलारी सुकुमारी॥
सुन्दर सिंहासन तेहिं पर आसन कोटि हुताशन द्युतिकारी।
सिर छत्र बिराजै सखिसंग भ्राजै, निज-निज कारज करधारी॥

सुर सिद्ध सुजाना हनै निसाना चढ़ै बिमाना समुदाई।
बरसहिं बहु फूला मंगलमूला अनुकूला सिय गुन गाई॥
देखहिं सब ठाढ़े लोचन गाढ़े सुख बाढ़े उर अधिकाई।
अस्तुति मुनि करहीं आनँद भरहीं पायन परहीं हरषाई॥

ऋषि नारद आए नाम सुनाए सुनि सुख पाए नृप ज्ञानी।
सीता अस नामा पूरन कामा सब सुखधामा गुन खानी॥
सिय सन गुनिराई बिनय सुनाई समय सुहाई मृदुबानी।
लालनि तन लीजै चरित सुकीजै यह सुख दीजै नृप रानी॥

सुनि मुनिबर बानी सिय मुसकानी लीला ठानी सुखदाई।
सोवत जनु जागीं रोवन लागीं नृप बड़भागी उर लाई॥
दम्पति अनुरागेउ प्रेम सुपागेउ यह सुख लागेउ मन लाई।
अस्तुति सिय केरी प्रेमलतेरी बरनि सुचेरी सिर नाई॥

निज इच्छा मखभूमि ते प्रगट भई सिय आय।
चरित किए पावन परम बरधन मोद निकाय॥

श्रीराम-स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणम्।
नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज पद कंजारुणम्॥
कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील-नीरद सुंदरम्।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरम्॥
भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनम्।
रघुनंद आनँदकंद कोशलचंद दशरथ-नंदनम्॥
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणम्।
आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणम्॥
इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनम्।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खलदल-गंजनम्॥

मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली॥

सोरठा

जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥

॥ सियावर रामचन्द्रकी जय ॥

भगवान् श्रीरामकी आरती

आरती कीजै श्रीरघुबरकी।
सत चित आनँद शिव सुंदरकी॥
दशरथ-तनय कौसिला-नन्दन,
सुर-मुनि-रक्षक दैत्य-निकन्दन,
अनुगत-भक्त भक्त-उर-चन्दन,
मर्यादा-पुरुषोत्तम वरकी॥ आरती कीजै०॥
निर्गुन-सगुन, अरूप-रूपनिधि,
सकल लोक-वन्दित विभिन्न विधि,
हरण शोक-भय, दायक सब सिधि,
मायारहित दिव्य नर-वरकी॥ आरती कीजै०॥
जानकिपति सुराधिपति जगपति,
अखिल लोक पालक त्रिलोक गति,
विश्ववन्द्य अनवद्य अमित-मति,
एकमात्र गति सचराचरकी॥ आरती कीजै०॥
शरणागत-वत्सल-व्रतधारी,
भक्त कल्पतरु-वर असुरारी,
नाम लेत जग पावनकारी,
वानर-सखा दीन-दुख-हरकी॥ आरती कीजै०॥

श्रीजानकीजीकी आरती

आरति कीजै जनक-ललीकी। राममधुपमन कमल-कलीकी॥
रामचंद्र मुखचंद्र चकोरी। अंतर साँवर बाहर गोरी।
सकल सुमंगल सुफल फलीकी॥
पिय दृगमृग जुग बंधन डोरी,पीय प्रेम रस-राशि किशोरी।
पिय मन गति विश्राम थलीकी॥
रूप-रास-गुननिधि जग स्वामिनि। प्रेम प्रबीन राम अभिरामिनि।
सरबस धन 'हरिचंद' अलीकी॥

भगवान् श्रीसीतारामकी आरती

आरती करत कौसल्या मैया॥

कंचन थार बारि घृत-बाती, जुगल अंगन की लेत बलैया।

रतन सिंहासन सुखद सुहावन राजैं दंपति चारों भैया॥

चमर मोरछल करत पवनसुत, जय-जय बोलत मन हरषैया।

सरसमाधुरी सियाराम की बाँकी झाँकी हृदय धरैया॥

राम
Pawan/29-12-2021
श्री हनुमानगढ़ी, अयोध्याधाम

जय श्रीराम
शुभ मंगलवार
जा पर कृपा राम
की होइ।ता पर
कृपा करें सब
कोई॥

श्री राम

सीताराम
मंगलम्
श्री सिद्धि सदन राम हर्षण कुंज अयोध्या जी

श्री सीताराम चरण कमलेभ्यो नमः
श्री रामजी
श्री सीताजी
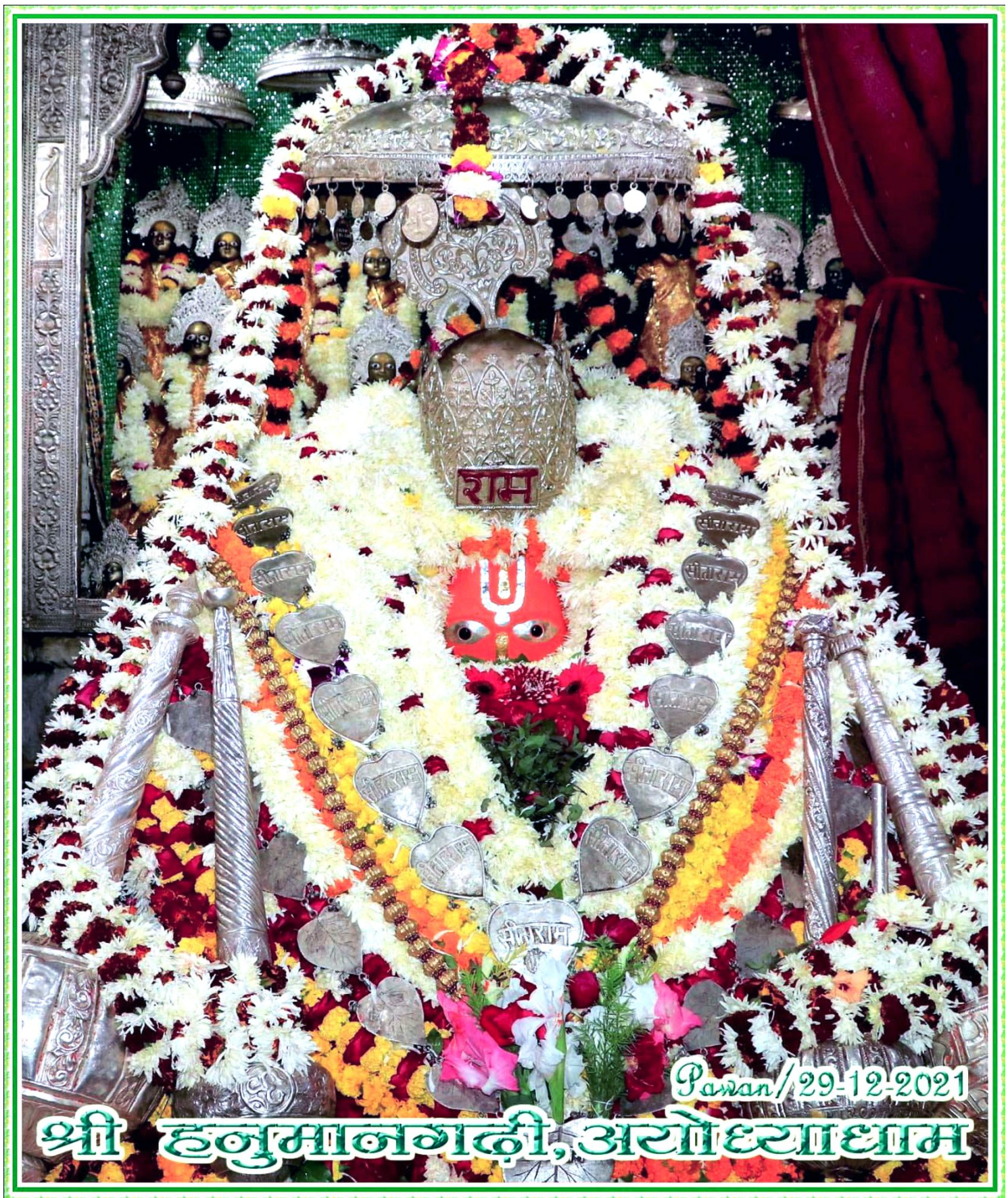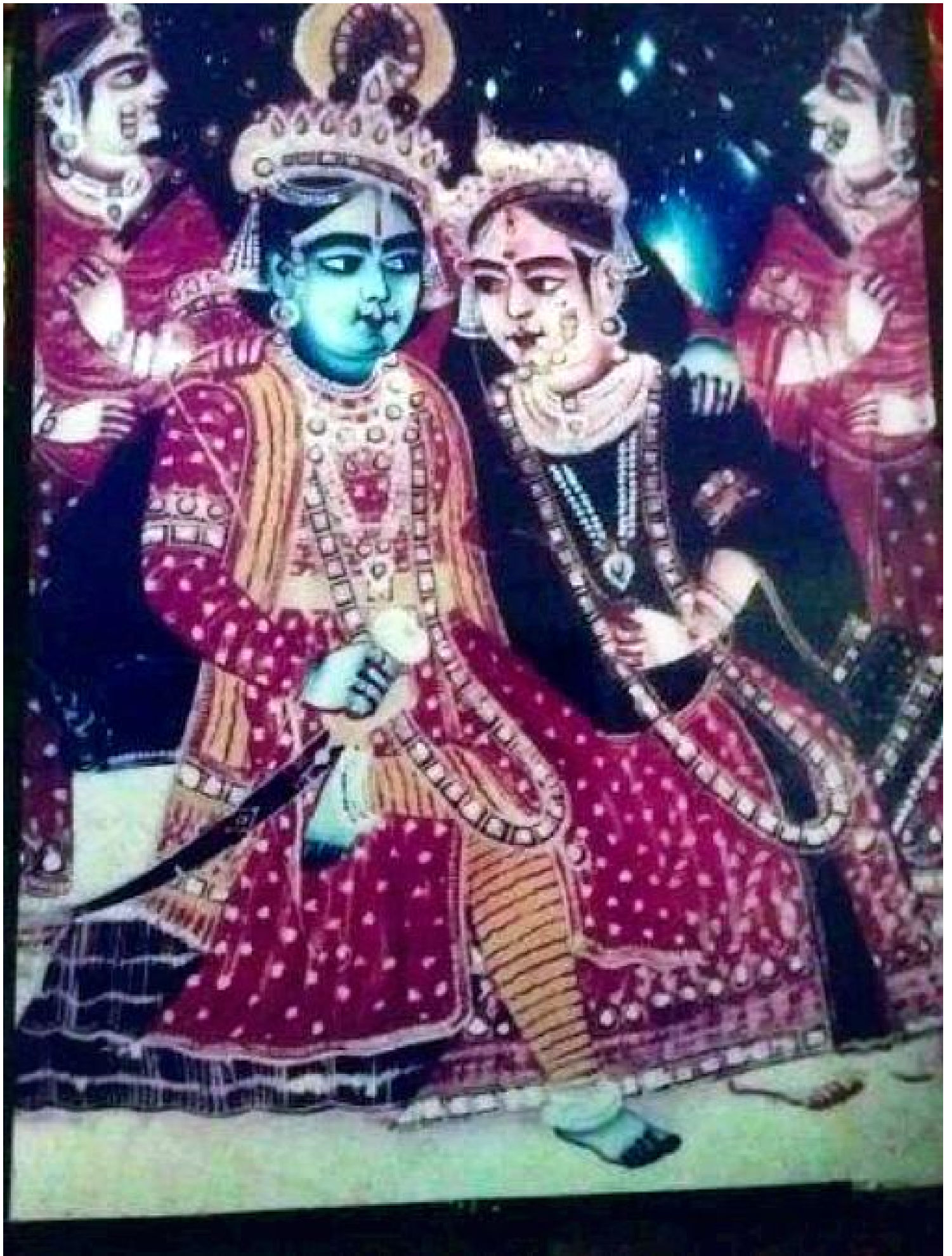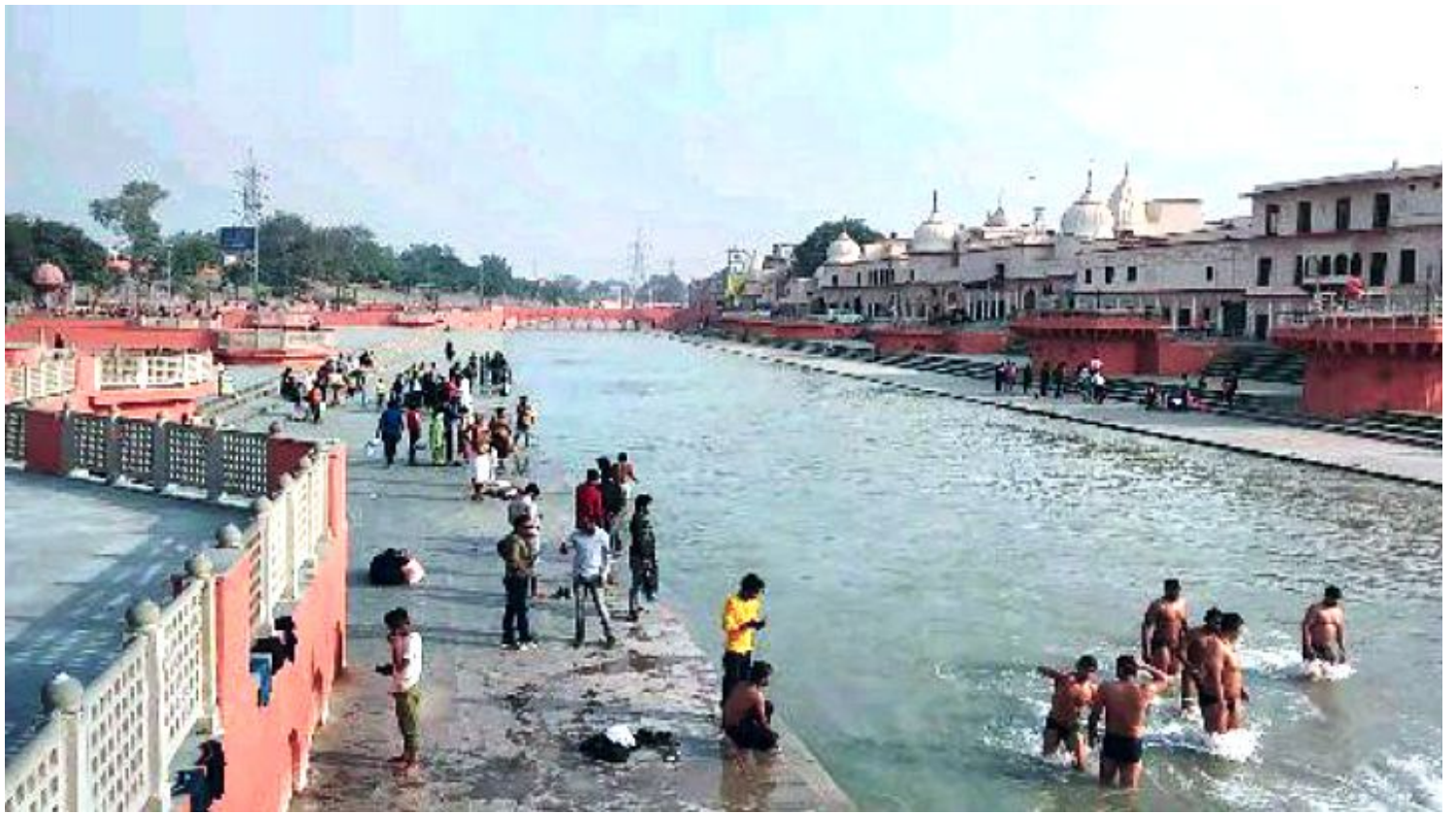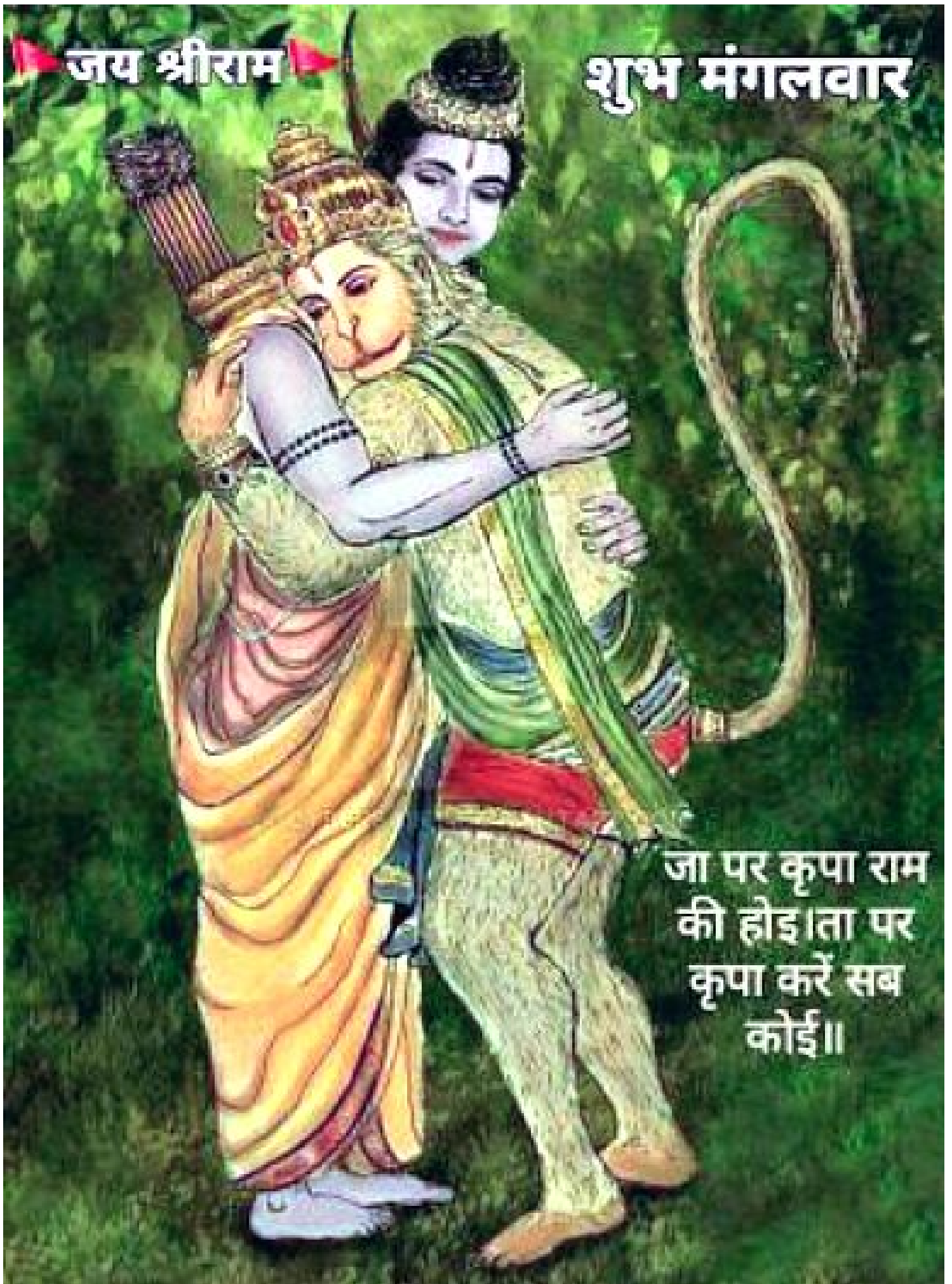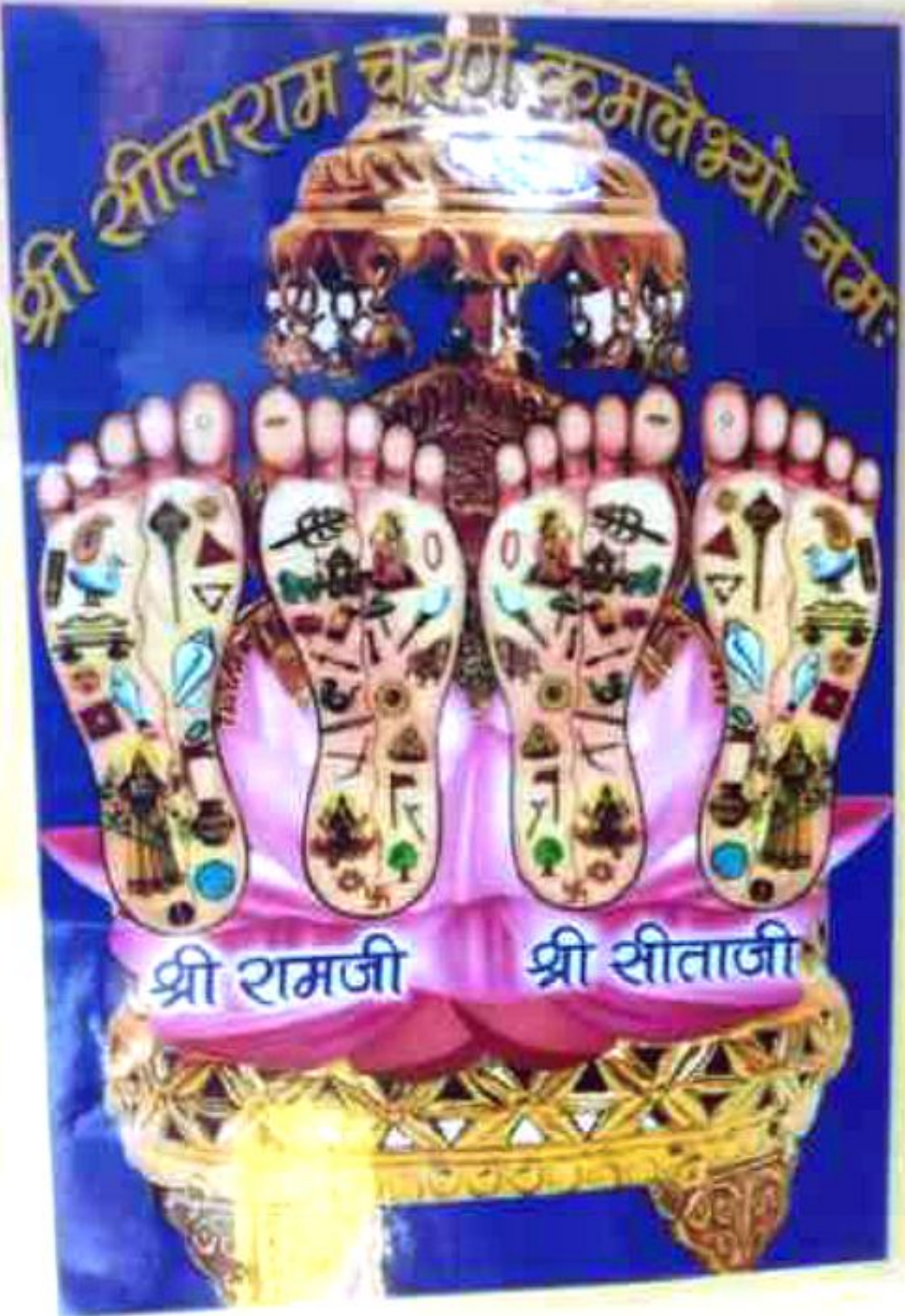
सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
सीतारामम् मंगलालयम्
राम् रामाय नमः

🌻🌹🌺 आज दिनांक-22/12/2021 दिन- बुधवार को प्रभु श्रीरामलला के शुभ श्रृंगार के अलौकिक दर्शन का लाभ उठाएं।🌺🌻🌹
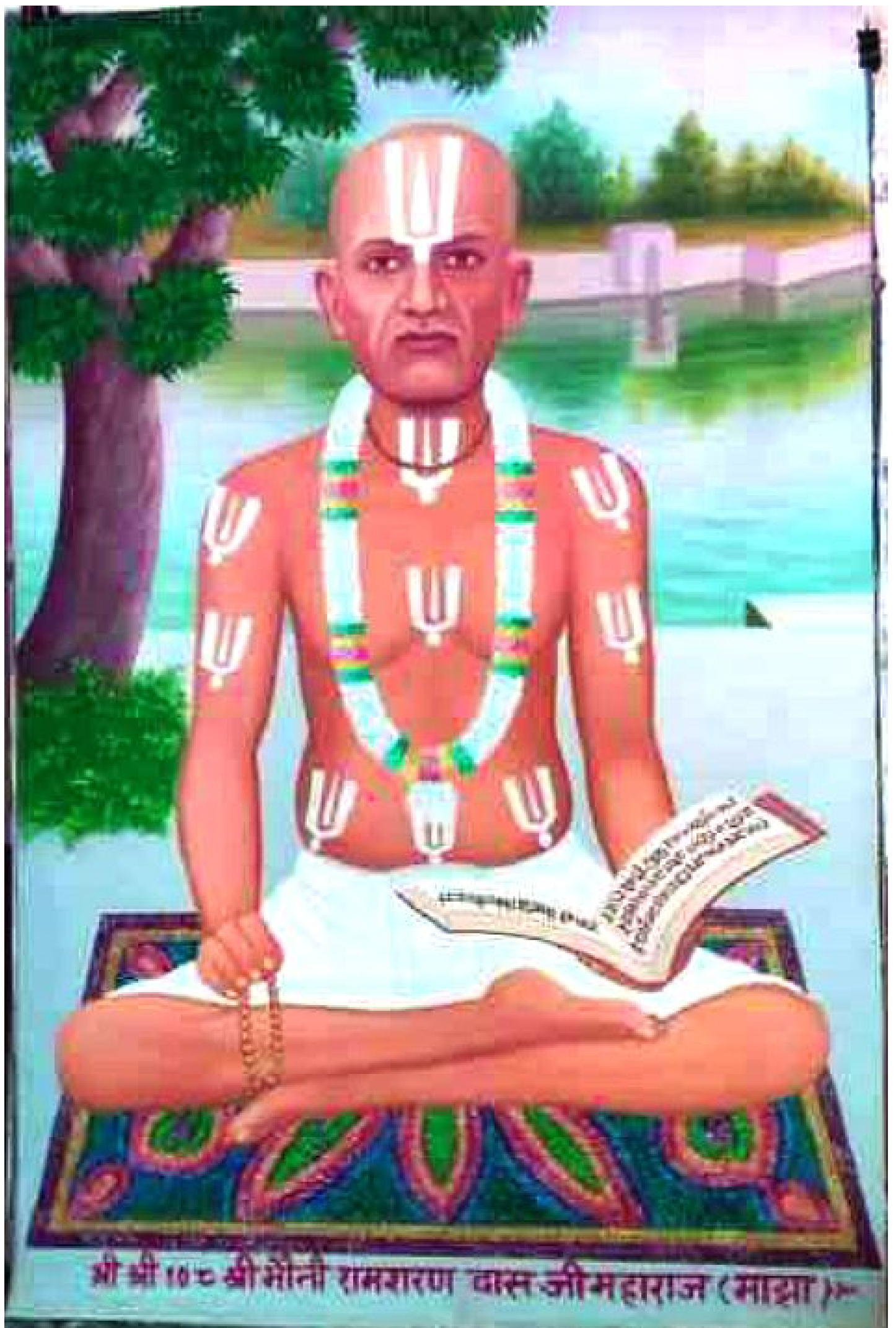
श्री श्री १०८ श्री मौनी रामशरण दास जी महाराज (माद्रा)

श्री 108 श्री मथुरा दास जी महाराज गद्दीनशीन (श्री हनुमान गढ़ी)

श्री श्री १०८ श्री रामवल्लभा शरण जी महाराज

श्री श्री 108 श्री रामकुमार दास जी महाराज (मणि पर्वत)

श्रीराम
श्रीरामश्रीराम
श्रीरामश्रीरामश्रीराम
श्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीराम
श्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीराम
श्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीराम
श्रीरामश्रीरामश्रीराम श्रीरामश्रीरामश्रीराम
श्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीराम
श्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीराम
श्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीराम
श्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीराम
श्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीराम
श्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीराम
श्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीरामश्रीराम
माता रामो मत्पिता रामचंद्र:
स्वामी रामो मत्सखा रामचंद्र:
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयलुर्नान्यं
जाने नैव जाने न जाने ।।
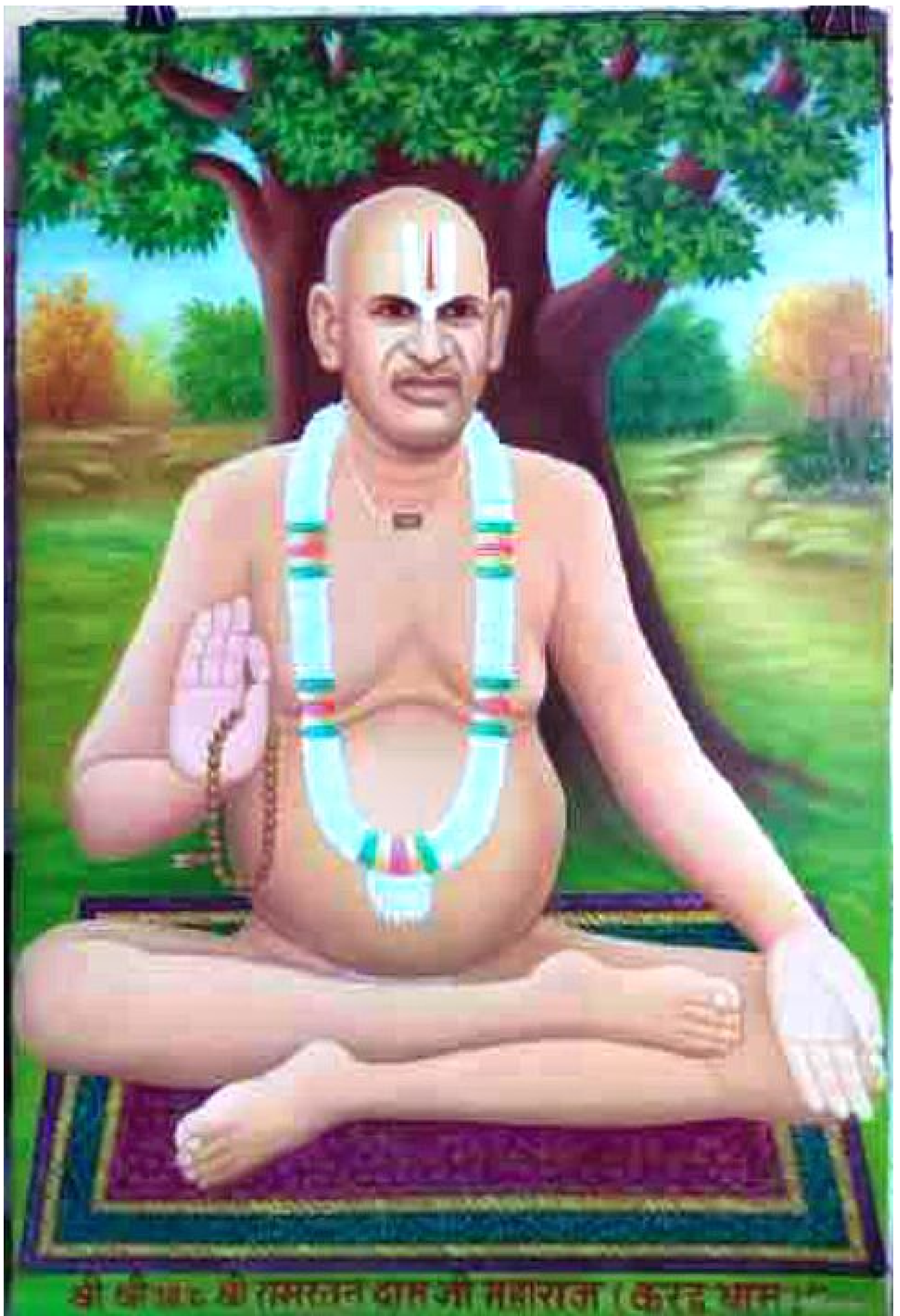
श्री श्री १०८ श्री श्री कान्त शरण जी महाराज (सद्गुरुकुटी)